Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मा पच्छ असाहुया भवे
अच्चेहि अणुसास अप्पगं।

मरणकाल में शोक या अनुताप न हो इसलिए तू काम-भोगों का अतिक्रमण कर अपने को अनुशासित कर।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 18 • 7 - 13 फरवरी, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 05-02-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

ऐतिहासिक दिन-ऐतिहासिक सूर्योदय-ऐतिहासिक जैविभा प्रांगण-ऐतिहासिक अमृत महोत्सव

इस गरिमापूर्ण प्रसंग को मनाकर हमारा धर्मसंघ बना कृतपुण्य: आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, जैन विश्व भारती, ३० जनवरी, २०२२
माघ कृष्ण त्रयोदशी

आज सूर्योदय से पूर्व प्राची दिशा की लालिमा सभी को जागरण की प्रेरणा देते हुए कुछ नया होने का संकेत दे रही थी। इसी के साथ शनैः-शनैः लालिमा के बदलते परिवेश में सूर्योदय हुआ कि अमृतायन का प्रांगण स्वरलहरियों के साथ गूंजायमान हुआ।

अमृतायन के विशाल द्वार पर अनगिनत श्रद्धालुओं की श्रद्धा का प्रवाह प्रवाहित था। उस प्रवाह में जनमानस की नजरें धर्मसंघ की आठवीं साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी पर टिकी। ये नजरें उनके मातृत्व को निहारने में उल्लसित, पुलकित हो रही थी।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी सम्मुखीन जनमेदिनी को नम्र नयनों से निहारती हुई सधे हुए कदमों से आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में पहुँचने को लालायित थी।

कामधेनू जैन विश्व भारती का सचिवालय मार्ग जिसकी रौनक कुछ रंगीनी युक्त थी, चारों ओर जन-समुदाय के हाथों अमृत वंदना की सुरम्य सामग्री अनेकानेक रूपों में प्रसारित थी। साध्वीप्रमुखा मंथर गति से पाँव-पाँव चल सुधर्मा सभा के विशाल परिसर पहुँच आचार्यप्रवर को वंदना की, आशीर्वाद लिया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को 'शासनमाता' सम्मान

शासनमाता व धर्मसंघ द्वारा 'युगप्रधान' अलंकरण का अनुरोध, आचार्यप्रवर ने प्रदान की स्वीकृति

आज प्रातःकाल से ही साध्वीप्रमुखाश्री के अमृत महोत्सव का उल्लास जन-जन के हृदय से प्रस्फुटित हो रहा था। सुधर्मा सभा में घड़ी ने नौ बजे का संकेत दिया कि धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता की पावन उपस्थिति के साथ साधु-साध्वियों का आगमन के साथ तीनों ओर श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा की मशाल कायम हो रही थी।

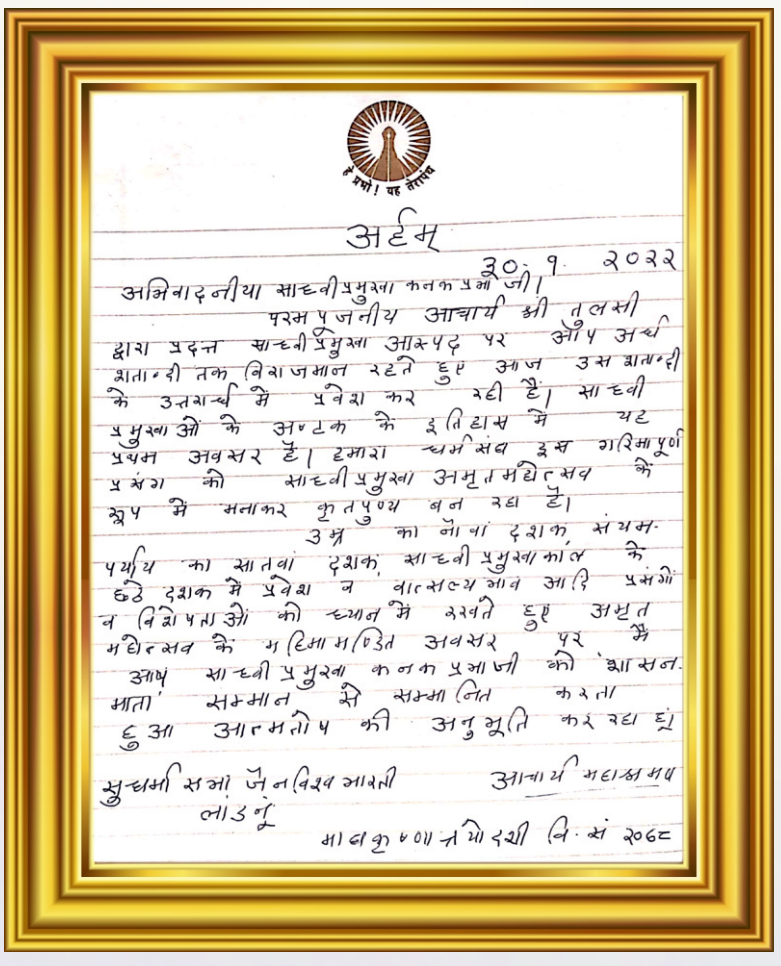

अर्हम्

३०. १. २०२२

अभिवादनीया साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी।
परमपूजनीय आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रदत्त साध्वीप्रमुखा आस्पद पर आप अर्ध शताब्दी तक विराजमान रहते हुए आज उस शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रवेश कर रही हैं। साध्वी प्रमुखाओं के अष्टक के इतिहास में यह प्रथम अवसर है। हमारा धर्मसंघ इस गरिमापूर्ण प्रसंग को साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव के रूप में मनाकर कृतपुण्य बन रहा है।
उम्र का नौवां दशक, संयम-पर्याय का सातवां दशक, साध्वीप्रमुखा काल के छठे दशक में प्रवेश व वात्सल्य भाव आदि प्रसंगों व विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अमृत महोत्सव के महिमामण्डित अवसर पर मैं आपं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को 'शासन-माता' सम्मान से सम्मानित करता हुआ आत्मतोष की अनुभूति कर रहा हूं।

सुधर्मा सभा जैन विश्व भारती
लाडनूं
आचार्य महाश्रमण
माघ कृष्णा त्रयोदशी वि. सं. २०७८

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की अभ्यर्थना में श्रद्धा, भक्ति-भावना एवं आशीर्वाद की मंगल चाह से आप्लावित कार्यक्रम का शुभारंभ महामंत्रोच्चार के बाद मिठास, सुवास ली हुई स्वर लहरियों के साथ अनेकानेक विविधमुखी प्रस्तुतियाँ विशाल जनमेदिनी के कानों एवं आँखों को तृप्त कर रही थी। कार्यक्रम के प्रथम परिवेश में मुनिवृंद, साध्वीवृंद, समणीवृंद एवं मुमुक्षु बहनों ने पृथक्-पृथक् रूप में गीतों की प्रस्तुति देते हुए चयन दिवस की अर्धसदी की पूर्णता के अवसर पर असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी को वर्धापित किया। मुनि विमल कुमार जी, मुनि कमल कुमार जी, मुनि उदित कुमार जी, मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि कुमारश्रमण जी, मुनि विजयकुमार जी, साध्वी कल्पलताजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी प्रज्ञावतीजी, साध्वी सुमतिप्रभा जी, साध्वी कनकश्रीजी, समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी ने श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

अमृत महोत्सव के आयोजन पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी को मंगलकामनाएँ प्रेषित करते हुए तेरापंथ के एकादशम महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज हमारे धर्मसंघ में एक अद्वितीय प्रथम अवसर आया है। संघ की वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के साध्वीप्रमुखा काल की अर्ध-सदी की संपन्नता और शताब्दी की उत्तरार्द्ध का अवसर आया है। हम इसे साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं।

मानो सबने मेरे पर कृपा की है

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आज हमारे धर्मसंघ के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर है जिसके मानो हम साक्षी बन रहे हैं, मैं आशातना तो नहीं करूँगा कि मेरे परमपूज्य पूर्व आचार्यों को ऐसा मौका नहीं मिला कि किसी साध्वीप्रमुखा का अमृत महोत्सव मना सके। मानो सबने मेरे पर कृपा की है कि तुम मनाओ। दसों आचार्यों ने मेरे पर बृहद-हस्त रखा कि तुम ही मनाओ ये अमृत महोत्सव।

साध्वीप्रमुखाश्री को 'शासन माता' अलंकरण

पूज्यप्रवर द्वारा आलेखित एक पत्र का स्वयं वाचन करते हुए आगे फरमाया कि हमारा धर्मसंघ इस गरिमापूर्ण प्रसंग को साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव के रूप में मनाकर कृतपुण्य बन रहा है। उम्र का नौवाँ दशक, संयम-पर्याय का सातवाँ दशक, साध्वीप्रमुखा काल के छठे दशक में प्रवेश व वात्सल्य भाव आदि प्रसंगों व विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अमृत महोत्सव के महिमा मंडित अवसर पर मैं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को 'शासन माता' सम्मान से सम्मानित करता हूँ। शासन माता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की जय हो।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
7 - 13 फरवरी, 2022

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का शुभारंभ

तेरापंथ धर्मसंघ सदैव वर्धमान बना रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २६ जनवरी, २०२२

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का आयोजन एवं साथ में भारतीय गणतंत्र का गणतंत्र दिवस। वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने वर्धमानता को वर्धापित कराते हुए फरमाया कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र, शांति और मुक्ति में वर्धमान रहो।

आज त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का शुभारंभ हुआ है। वर्धमान महोत्सव में चार बातें सन्निहित देख रहा हूँ।

चार बातें हैं—भगवान महावीर का एक नाम वर्धमान है। हम उनकी परंपरा से संबंधित है। मानो वर्धमान विराजमान है। यह वर्धमानता का प्रतीक है। दूसरी बात है कि मर्यादा महोत्सव से पहले साधु-साध्वियों की संख्या वर्धमान हो जाती है, बढ़ती है। उस वर्धमानता के उल्लास को उजागर करने वाला वह वर्धमान महोत्सव होता है।

तीसरी बात जो मेरे मन में आई है—संख्या बढ़ी है, कुछ समय बाद घट सकती है। संस्था वृद्धि लंबी हो जाए, संघ में संख्या ज्यादा हो और बढ़े। वो अपेक्षित है। वर्धमान महोत्सव से प्रेरणा मिल जाए कि संख्या बढ़े। मुमुक्षु संख्या वृद्धि हो। पुरुषों की भी संख्या बढ़े। हर सिंघाड़ा प्रयत्न भी करे तो मुमुक्षुओं की संख्या बढ़ सकती है।

चौथी बात है—गुणवत्ता वृद्धि, गुणात्मक वृद्धि हो। पूज्य ऋषिराय महाराज को भी आज माघ कृष्णा नवमी को आचार्य पद प्राप्त किए दो सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। धर्मसंघ को तीसरे आचार्य के रूप में एक युवा व्यक्तित्व प्राप्त हुए थे। लगभग ३० वर्षों तक धर्मसंघ को अपना आचार्यत्व प्रदान किया था। मुझे भी पूज्य महाप्रज्ञ जी ने फरमा दिया—रूप बसे ऋषिराय का। मैं गुरु की वाणी को कृतार्थ करता रहूँ। मुझमें भी ऋषिराय की विशेषताएँ वर्धमान होती रहें।

हमारा धर्मसंघ वर्धमान तो ऐसे है ही। ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई है। कितने पी०एच०डी० डॉक्टर एम०ए० आदि डिग्री प्राप्त किए हुए हैं। यह भी वर्धमानता की बात है। महाप्रज्ञ श्रुत आराधना से भी कितने जुड़े हुए हैं। ज्ञान से दिमाग भी विकसित हो जाता है। श्रावक-श्राविकाओं में भी विकास हो रहा है। आगम कार्यों से भी कितने जुड़े हुए हैं। समणियाँ प्राध्यापन का कार्य भी कर रही हैं। हमें और भी विकास करना है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी तो बिना डिग्री के भी इतने बड़े हैं कि उनके नाम पर पी०एच०डी० करने के लिए साध्वियाँ तैयार हैं। हमारे पास कई ऐसे व्यक्ति हैं, जो अच्छे वक्ता हैं, जिनके पास ज्ञान है, प्रबुद्धता है। ज्ञान विकास में हमारा संघ वृद्धिंगत हुआ है। हम और विकास करने का प्रयास करें।

हमारा संघ वर्धमान रहे, मैं भी वर्धमान रहूँ, ये मंगलकामना है। आज २६ जनवरी का दिन गणतंत्र दिवस है। जैविभा इंस्टीट्यूट में भी सुबह कार्यक्रम हुआ था। हमारा जो अध्यात्म का संदेश प्राचीन ऋषियों-मुनियों से मिलता रहा है, तो भारत में अध्यात्म की चेतना पुष्ट रहे। संविधान की अवज्ञा न हो। नैतिकता संयम की चेतना भारत में पुष्ट रहे। भारत की जनता खूब चित्त समाधि शांति में रहे। भारत अपना विकास धार्मिक-आध्यात्मिक, नैतिक संदर्भों में करता रहे, मंगलकामना।

पूर्व वाइस चांसलर साध्वी चारित्रप्रभाजी जो अग्रणी के रूप में विचरकर पहली बार गुरुकुलवास में आई हैं। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि चार से पाँच होकर सवाई बनकर आई हैं। खूब अच्छा विकास होता रहे।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि जो बरसाती मेंढ़क होता है, उनका अस्तित्व कुछ समय का ही होता है। आचार्य भिक्षु ने संघ में शुद्धाचार का पालन हो इसके लिए उन्होंने नई-नई मर्यादा, नियम बनाकर संविधान लिखा। उत्तरवर्ती आचार्यों ने भी मौलिक मर्यादाओं को सुरक्षित रखते हुए नई मर्यादाओं का निर्माण किया। शुद्धाचार के संस्कार हर साधु की अस्थि-मज्जा तक चले जाएँ, ऐसा प्रयास किया है। इसी कारण तेरापंथ का आचार उन्नत बना हुआ है।

शासनश्री साध्वी विजय कुमार जी ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के चरणों में निवेदन करते हुए समझाया कि इंतजार की घड़ियाँ लंबी होती हैं। साध्वी चारित्रप्रभा जी के सिंघाड़े ने गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल, व्यवस्था समिति से राजेश दुगड़, मुमुक्षु बहनों एवं समणीवृंद ने वर्धमानता के स्वरों पर अच्छी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि दिनेश कुमार जी ने संयोजकीय दायित्व निर्वाह करते हुए बताया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने फरमाया था कि महाश्रमण की सेवा प्रशंसनीय है। इनमें भारमलजी स्वामी और ऋषिराय जी स्वामी के दर्शन किए जा सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने शासनश्री मुनि विजय कुमार जी के बारे में फरमाया कि लंबे समय के बाद मुनिश्री के दर्शन हुए हैं। स्वतंत्र विचरण के बाद पहली बार गुरुकुलवास में पधारे हैं। साथ में रमणीय जी भी हैं, रमणीयता बनी रहे, अच्छी सेवा करते रहें।

आगम का स्वाध्याय चारित्र शुद्धि का साधन बन सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २८ जनवरी, २०२२

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का तीसरा व अंतिम दिन। वर्धमान के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान में हमें वर्धमान रहने का प्रयास करना चाहिए। दर्शन भी हमारी वर्धमानता का एक विषय तब तक बना रहना चाहिए, जब तक क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति न हो जाए।

वह जीव एक प्रकार से धन्य है, जो क्षायिक सम्यक्त्व संपन्न बन जाता है। क्षायिक सम्यक्त्व स्थायी सम्यक्त्व होता है। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में तो कई बार अस्थायित्व भी रहता है। औपशायिक सम्यक्त्व भी स्थायी नहीं है। सास्वादन और वेदक सम्यक्त्व भी अस्थायी है ही। चारित्र में भी वर्धमानता हो। साधु-साध्वी, समण श्रेणी, श्रावक-श्राविका या किसी अंश में मिथ्यात्वी की करणी भी निर्वद्य है, उसकी भी वर्धमानता रहे।

निश्चय में रहना कठिन है कि किसके कौन सम्यक्त्व है। अभव्य जीव भी कोई साधु संस्था में प्रवेश पा ले तो पा ले। मान्यता है, अभव्य जीव नव ग्रैवेयक देवलोक तक जा सकता है। अभव्य का तो भला हो सकता है, पर हमारा भी नुकसान नहीं हो सकता है। व्यवहार में तो हमने उसे साधु ही मान रखा है। कौन जाने कौन साधु है, कौन असाधु है।

चारित्र की जो बात है, हमारी चारित्र की भी निर्मलता बढ़ती रहे। साधु के जो पाँच महाव्रत हैं, वो मानो पाँच हीरे हैं। इन हीरों के सामने चक्रवर्ती का पद भी छोटा है। ये हीरे तो मोक्ष तक पहुँचाने वाले, कीमती होते हैं। इन हीरों को कोई चुरा न ले, ये सुरक्षा हमें करनी है। चुराने वाला सबसे बड़ा चोर मोहनीय कर्म है। इस चोर से साधु, श्रावक या सम्यक्त्वी बचकर रहे। इस चोर से सावधानी रखनी चाहिए कि वो प्रवेश न कर सके।

पाँच महाव्रतों की सुरक्षा के संदर्भ में ८ प्रवचन मालाएँ हैं। पाँच समिति और तीन गुप्तियाँ—ये संरक्षिका है। हम समितियों-गुप्तियों को मजबूत-बलवती रखें। चारित्र निर्मल रहे, इसके लिए एक उपाय है—प्रतिक्रमण। दूसरा है—प्रायश्चित। ये दो उपाय अच्छे हैं। प्रतिक्रमण शुद्धि का एक बढ़िया उपाय है। सुंदर व्यवस्था हमें मिली है, चारित्र की विशुद्धि के लिए। प्रतिक्रमण धीरे-धीरे करें तो अच्छा रह सकता है। शांति से करें। समय के अतिक्रमण से भी बचें।

प्रतिक्रमण के बीच में बातें न करें, उच्चारण भी सही हो। दोष लग जाए तो प्रायश्चित भी ले लेना चाहिए। उसमें भूल न हो। अधिकृत से प्रायश्चित ग्रहण कर लें। आलोयणा भी शुद्धि का अच्छा उपाय है। दोष लगे, आलोयणा नहीं ली और वो साधु आगे चला जाए तो वो दोष साथ लेकर गया है, आगे समस्या हो सकती है। दोष मुक्त हो जाए काल धर्म पाने से पहले। आलोयणा करा दो यह मन में रहे। अधिकृत या जानकार से आलोयणा ले शुद्ध हो जाएँ।

ईर्या-भाषा समिति में हम जागरूक रहें। पुज्य गुरुदेव तुलसी के पिलानी के प्रसंग को समझाया। गुरुदेव तुलसी कितनी शिक्षाएँ फरमाया करते थे। ये सब चारित्र शुद्धि से जुड़ी बातें थी जो हमारे जीवन के लिए दिशा-निर्देश बन सकती हैं।

स्वाध्याय-जप का ध्यान रखें। आगम का स्वाध्याय भी चारित्र शुद्धि का साधन हो सकता है। हम क्षांति, मुक्ति, निर्लोभता आदि में विकास करें, यह काम्य है। वर्धमान महोत्सव का आज अंतिम दिन है, हम सभी वर्धमान रहें। वर्धमानता की दिशा में आगे बढ़ें। हमारे सारे कार्यक्रम अध्यात्म रूप में संवृद्ध हों।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आचार्य भारमलजी जागरूकता और ऋजुता के पर्याय थे : आचार्यश्री महाश्रमण

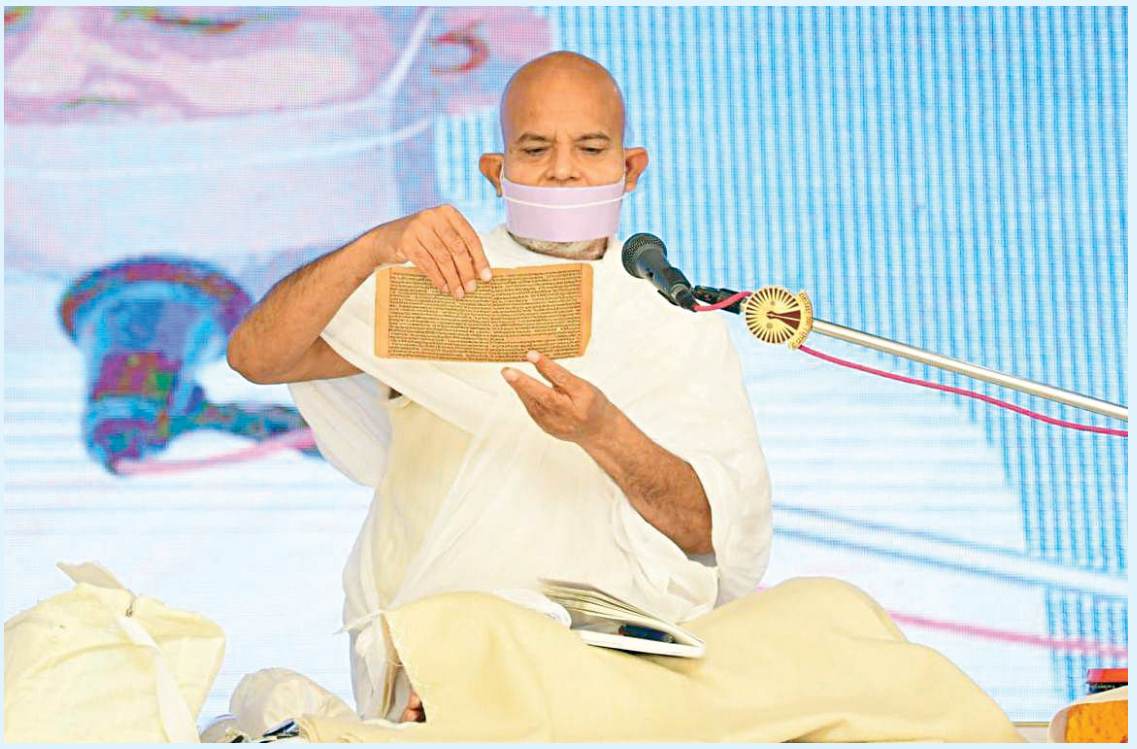

जैन विश्व भारती, २५ जनवरी, २०२२

आचार्यश्री भारमलजी महाप्रयाण द्विशताब्दी के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत वर्तमान के भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आचार्य को इतना महत्त्व दिया गया है कि एक केवलज्ञान संपन्न साधु भी आचार्य की उपासना, सेवा, विनय करें। धर्मशासन-जैन, शासन में और हमारे भैक्षव शासन में एक आचार्य की व्यवस्था है।

हम आज परमपूज्य आचार्यश्री भारमलजी स्वामी का महाप्रयाण द्विशताब्दी का त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आज तीसरा अंतिम और मूल दिन मना रहे हैं। आज के दिन माघ कृष्णा अष्टमी को राजनगर मेवाड़ में आचार्यश्री भारमलजी स्वामी ने जीवन का अंतिम श्वास लिया था। करीब १८ वर्षों तक आचार्य के रूप में सेवा देकर और करीब २८ वर्षों तक युवाचार्य पद के रूप में रहकर सेवा दी थी। आज उनका २०७वाँ महाप्रयाण दिवस है। द्विशताब्दी की संपन्नता का दिन है।

आचार्यश्री भारमलजी जैसे एक महान व्यक्तित्व धर्मसंघ को प्राप्त हुए। उस समय हमारा धर्मसंघ प्रथम चरण या पहली शताब्दी में चल रहा था। उनके जीवन की अनेक बातें हैं। विशेषताएँ हैं। आगम स्वाध्याय की प्रेरणा हम परम पूज्य भारमलजी स्वामी से ले सकते हैं। वे खड़े-खड़े उत्तराध्ययन का स्वाध्याय कर लेते थे।

एक व्यक्ति आगे बढ़ता है, तो वो कितना कसौटी पर कसा जाता होगा, खपता होगा। तब एक व्यक्ति किस रूप में सामने आता है। जीवन में कुछ विशेष बनना है तो विशेष करना भी अपेक्षित है। भारमलजी स्वामी ने विशेष किया था तभी वे आचार्य के रूप में सामने आए थे।

आचार्य भिक्षु का उनसे पूर्व जन्म का संबंध रहा हो सकता है। मुनि चंद्रभाणजी ने भी उनको भोला कहा था। भोला दो तरह के होते हैं। एक तो मानसिक कमजोरी के कारण। दूसरा ऋजुता, सरलता, ज्ञान है तब भोलापन हो सकता है। आचार्यश्री भिक्षु ने मुनि भारमलजी को ही अपना उत्तराधिकारी क्यों चुना होगा? पूर्व जन्म का संबंध भी हो सकता है, पर भारमलजी स्वामी में गुरु के प्रति समर्पण, विनयशीलता का भाव और उनकी निपुणता भी रही होगी। वे लिपिकार भी थे।

भारमलजी स्वामी को कितना कसा गया कि कोई गृहस्थ त्रुटि निकाल दे तो तुम्हें तेला करना होगा। बनना है, तो कभी-कभी जन्ती में से निकलना होता है, तब इस रूप में आदमी सामने आ सकता है। बड़ा बनने के लिए सहना पड़ता है और कसौटियों पर खरा उतरना होता है। तभी आदमी भारमलजी स्वामी की तरह पद पर आ सकता है।

भारमलजी स्वामी के समक्ष अनुशासन का प्रसंग आया तो उन्होंने कठोरता भी दिखाई। मौजीरामजी स्वामी का प्रसंग समझाया। उन्होंने संतों को उनके आने पर उनको वंदना करने की भी मनाही कर दी। गुरु का कृपापूर्ण हाथ भी मस्तक पर नहीं टीका। बाद में प्रसन्न भी हो गए थे। हम उनके जीवन से अनुशासन का शिक्षण ले सकते हैं।

आचार्य भारमलजी अद्वितीय आचार्य थे। वे प्रथम युवाचार्य और आचार्य भिक्षु के अनंतर शिष्य थे। अपने उत्तराधिकार पत्र में दो नाम लिखने वाले भी वे तेरापंथ के एक ही आचार्य थे, भले बाद में एक नाम अप्रभावित कर दिया गया था। विद्या यही है कि आचार्य अपने युवाचार्य का निर्णय कर दे, उसके बाद का निर्णय आगे आने वाले आचार्य करें।

मैं बहुत ही विनय और श्रद्धा के साथ प्रणत होता हूँ उनके प्रति कि उनके जैसे आचार्य धर्मसंघ को मिले। आज उनके महाप्रयाण को दो सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। भारमल जी जैसे आचार्य हमें मिले। आज अनेक लोगों ने अपने ढंग से तप किया है। साथ में जप की बात है। पूज्यप्रवर ने भी खड़े-खड़े जप किया-करवाया। श्रद्धा-भक्ति उनके चरणों में चढ़ा सकते हैं।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने पूज्य आचार्यश्री भारमल जी के जीवन प्रसंगों को विस्तार से समझाते हुए उनके कान न बिंधवाने के प्रसंग को समझाया कि उनमें कितनी सरलता थी। वे थे तो मेवाड़ के पर आचार्य भिक्षु जो मारवाड़ के थे उनके गोद आ गया हूँ। इसलिए मेवाड़ और मारवाड़ दोनों जगह का हूँ। उस घटना से उन्होंने श्रावकों को भी ज्ञान दिया। जयपुर न जाने के उनके प्रसंग को भी समझाया कि लाला हरचंदराय जैसा श्रावक एक होकर भी हजार जैसा है। स्थानकवासी मुनि की प्रेरणा से वे जयपुर भी पधारे। जयाचार्य के परिवार की दीक्षाएँ भी हुईं।

मुख्य नियोजिका जी, साध्वीवर्या जी एवं मुख्य मुनिप्रवर ने भी उनके जीवन के अनेक रूपों-गुणों के बारे में समझाया।

साध्वीवृंद ने पूज्य गुरुदेव तुलसी रचित गीत–'भारीमाल गणी, म्हारी माला रो मणी, राखो राखो हिरदै में' का सुमधुर संगान किया। मुनिवृंद एवं साध्वीवृंद द्वारा समुह गीत की प्रस्तुति हुई।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीत, ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की प्रस्तुति, तेयुप व महिला मंडल द्वारा समूह गीत की प्रस्तुति हुई। महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल ने अपनी भावना रखी। राजस्थान सरकार के अल्प संख्यक मंत्री व वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष खानूखां पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारे। उन्होंने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पूज्यप्रवर का थली संभाग में पदार्पण

आदमी परिमितभाषी रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

नवदीक्षित साध्वियों को प्रदान की बड़ी दीक्षा

सुजानगढ़, ३१ जनवरी, २०२२

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ की राजधानी लाडनूं में १६ दिवसीय प्रवास संपन्न कर मंगल विहार कर सुजानगढ़ पधारे।

मुख्य प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में बताया गया है कि आदमी बिना पूछे बिना मतलब ना बोले।

बोलना हमारे जीवन का, व्यवहार का एक अंग भी है, परंतु कब बोलना, कब नहीं बोलना, कितना बोलना, कैसे बोलना, क्या बोलना, क्या नहीं बोलना ये ऐसे कुछ प्रश्न हैं, जिन पर ध्यान देने से हमारी वाणी अच्छी हो सकती है। आदमी परिमितभाषी रहे। मितभाषिता, परिमितभाषिता जीवन का एक गुण है। ऐसा होने से आदमी की भाषा अच्छी बन सकती है।

आदमी बोले तो झूठ नहीं बोले। ये सात साध्वियाँ हैं, इनको २४ जनवरी को जैन विश्व भारती में दीक्षा दी थी। आज इनकी बड़ी दीक्षा है। सिद्धांत की भाषा में छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं। साधु के पाँच महाव्रत होते हैं। गृहस्थों के लिए अणुव्रत होते हैं। ये पाँच महाव्रत बड़े नियम हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। पाँच महाव्रत व रात्रि भोजन विरमण को विस्तार से समझाया।

साधु माँगकर क्यों खाए, ये एक चिंतन हो सकता है। साधु के लिए माँगना बुरी बात नहीं है, क्योंकि साधु तो त्यागी है। गृहस्थी के लिए माँगना बुरी बात हो सकती है। साधु अकिंचन है, उसने घर-बार छोड़ दिया है, उसे अधिकार है कि वह भिक्षा के द्वारा प्राप्त कर सकता है। यह त्याग-संयम है। कल की चिंता नहीं।

साधु अहिंसा का पालन करता है, कोई दोष लग जाए तो प्रायश्चित ले ले। साधु पद यात्रा करे, देख-देखकर चले।

हम लोग अभी अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। आज इस यात्रा में लंबे अरसे के बाद सुजानगढ़ आना हुआ है। गुरुदेव तुलसी ने यहाँ नया काम किया था कि अपनी मौजूदगी में युवाचार्य महाप्रज्ञ जी को आचार्य बना दिया था। आज थली क्षेत्र में हमारा आना हुआ है। छठे आचार्य पुण्य माणकगणी का महाप्रयाण यहीं हुआ था। सुजानगढ़ हमारे अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों से भी जुड़ा हुआ है।

अनेक गणमान्य व्यक्तियों से मिलना हुआ है। थली में नैतिकता-नशामुक्ति और सद्भावना की चेतना पुष्ट रहे। मंगलकामना।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय विधायक मनोज मेघवाल रतनगढ़ के विधायक अभिनेष महर्षि, चुरु के विधायक राजेंद्र राठौड़, भाजपा के राजस्थान के अध्यक्ष सतीश पूनिया ने थली प्रदेश में पदार्पण पर अपनी भावना अभिव्यक्त की। आभार सभाध्यक्ष धर्मेंद्र चोरड़िया ने किया। थली प्रदेश के अन्य वर्तमान व पूर्व विधायक भी पूज्यप्रवर की सन्निधि में पधारे।

विकास परिषद के संयोजक मांगीलाल सेठिया ने भी पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी भावना की अभिव्यक्ति दी। स्थानीय सभा द्वारा गणमान्य व्यक्तियों का साहित्य से सम्मान किया गया।

नवदीक्षित साध्वियों ने गीत के माध्यम से अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आगम का स्वाध्याय चारित्र शुद्धि का साधन...

(पृष्ठ २ का शेष)

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि इस कलियुग में हमें भिक्षु शासन प्राप्त है। इस भिक्षु शासन रूपी कल्पवृक्ष की छाया में हम अपना विकास कर रहे हैं। हमें महान आचार्य प्राप्त हुए हैं। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसे महातपस्वी धर्माचार्य प्राप्त हैं। संख्या वृद्धि के साथ हमारे में गुणों की वृद्धि हो। वर्धमानता की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण गुण है–विनय। हमारी साधना का मूल लक्ष्य विनय है।

मुनिवृंद द्वारा समुह गीत का सुमधुर संगान किया गया। राहुल बैद ने गीत द्वारा अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
7 - 13 फरवरी, 2022

✦ *आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

रोचक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम

शिवकाशी, तमिलनाडु।

अभातेममं के निर्देशानुसार मासिक कार्यशाला रूपांतरण के अंतर्गत कषाय विषय पर रोचक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम 'जिज्ञासा एवं समाधान' का आयोजन किया। शिवकाशी महिला मंडल की बहनों के प्रश्नों के उत्तर संरक्षिका संपत डागा और रानी बरड़िया ने अच्छी तरह समझाए।

सभी का स्वागत व कार्यक्रम का संचालन मंत्री कुसुम बैद ने किया। अध्यक्ष सुशीला सेठिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया। बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

नोएडा।

अभातेममं द्वारा निर्देशित नोएडा महिला मंडल द्वारा असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मनोनयन अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अमृत सिंचन कार्यक्रम में चैतन्य रश्मि पुस्तक पर आधारित क्विज प्रतियोगिता का विभिन्न रचनात्मक राउंड में आयोजन हुआ। सर्वप्रथम पूर्वाध्यक्ष संतोष बैद द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण व रेशम बांठिया द्वारा प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी ने प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ देते हुए सभी का स्वागत किया। क्विज प्रतियोगिता संयोजिका पूर्वाध्यक्ष कुसुम बैद ने प्रतियोगिता के नियम के बारे में जानकारी देते हुए उपाध्यक्ष सुमन बोथरा के साथ सरल एवं रोचक तरीके से प्रतियोगिता करवाई। चैतन्य, रश्मि, अमृत और सिंचन चार ग्रुप में हुई इस प्रतियोगिता को पाँच राउंड में करवाया।

प्रथम स्थान पर अमृत ग्रुप (संतोष बैद, चंद्रमाला, प्रेम सेखानी, नेहा जैन), द्वितीय स्थान पर रश्मि ग्रुप (सृष्टि जैन, सोनिका बैंगानी, संतोष जैन और आयुषी बैंगानी) रहे। कुछ प्रश्न दर्शकों से भी पूछे गए जिसमें दीप्ति बैद व प्रीति तातेड़ ने सही उत्तर दिए। अध्यक्षा कविता लोढ़ा ने प्रतियोगिता का समीक्षात्मक चिंतन प्रस्तुत करते हुए परिणामों की घोषणा की। सुमन बोथरा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री दीपिका चौरड़िया ने किया।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में डी०वी० कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में 'चैतन्य रश्मि' पुस्तक पर आधारित क्विज प्रतियोगिता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के जीवन पर आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण का संगान कन्या मंडल व महिला मंडल द्वारा किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने पधारे हुए सभी मंडल की बहनों और कन्या मंडल की बेटियों का स्वागत किया। तेरापंथ धर्मसंघ की महानायिका साध्वीश्री कनकप्रभाजी के ५०वें मनोनयन दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित होने जा रहे अमृत महोत्सव की जानकारी दी।

क्विज प्रतियोगिता में पाँच ग्रुप बनाए गए जो क्रमशः तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखाश्री जी के नाम पर थे। कार्यक्रम को पाँच रोचक भागों में खिलाया गया। इसमें प्रथम स्थान गुलाबां जी टीम की प्रेम सुराणा, शांता बैद, कुसुम दुधोड़िया, द्वितीय स्थान सरदारांजी टीम के चेतन बैद, संगीता बैद, सुमित बैद और तृतीय स्थान जेंठा जी की टीम की संतोष पींचा, निशा पींचा, मैत्री सुराणा को मिला। सभी प्रतिभागियों को महिला मंडल की ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम की संयोजिका पुष्पा बरड़िया, अंजु गोलछा, डिंपल बैद, प्रेक्षा श्यामसुखा, पूर्वा सुराणा रहीं। संचालन डिंपल बैद और आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया। कार्यक्रम में कन्या मंडल की बेटियाँ कन्या मंडल संयोजिका प्रार्थना सुराना, सह-संयोजिका कुंजल बोथरा, मोक्षा सुराना, श्रेया बोथरा, मानसी बुच्चा, प्रियंका ललवानी ने अपनी सहभागिता निभाई। महिला मंडल सदस्य मीनाक्षी सुराणा, चंदा बैद, शीला दुगड़, मंजु एन दुगड़ आदि की उपस्थिति रही।

बेंच का उद्घाटन

नोएडा।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत नोएडा महिला मंडल द्वारा बेंच लगवाने का कार्य संपादित किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। हमारा कर्तव्य एनजीओ जहाँ पर ६०-७० बच्चे एक खुले मैदान में पढ़ते हैं, वहाँ पर दो बेंच लगवाई गई। बेंच का उद्घाटन भाजपा जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा शारदा चतुर्वेदी, प्रदेश सोशल मीडिया प्रभारी सुचित्रा पाठक कक्कर, मंत्री मधु मेहरा, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी एवं निवर्तमान अध्यक्ष अर्चना भंडारी, अध्यक्ष कविता लोढ़ा सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

भाजपा जिला अध्यक्ष ने तेमम के इस सराहनीय कार्य के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा की। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा जिला अध्यक्ष व प्रदेश सोशल मीडिया प्रमुख को साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। सभी बच्चों के लिए खाने की चीजों का भी वितरण किया गया। सभी बच्चों ने नमस्कार महामंत्र सीखा।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

साध्वीप्रमुखाश्री को 'शासनमाता' सम्मान...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गुरु द्वारा प्रदत्त पत्र को मस्तक पर लगाया

आह्वान के स्वर में संपूर्ण धर्मसंघ को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने फरमाया कि मैंने जो ये शासनमाता का सम्मान प्रदान किया है, क्या पूरा धर्मसंघ मेरे साथ है? 'ॐ अर्हम्' के समन्वित स्वरों से पूरे धर्मसंघ ने श्रद्धाभिव्यक्ति की।

तत्पश्चात आचार्यप्रवर ने फरमाया कि मैं आज साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को शासन माता से सम्मानित करता हुआ आत्मतोष की अनुभूति कर रहा हूँ।

पूज्यप्रवर ने वह पत्र साध्वीप्रमुखाश्री जी को अर्पण किया। गुरु द्वारा प्रदत्त पत्र को शासन माता ने मस्तक पर लगाया।

और किसके साथ हो, आप बताओ

पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार सर्वप्रथम संतवृंद मंच के सन्निकट पहुँचे और संत समुदाय की ओर से शासन माता के सम्मान रूप में मुख्य नियोजिकाश्री साध्वी विश्रुतविभा जी ने उन्हें उत्तरीय ओढ़ाया, इसी तरह उपस्थित साध्वियाँ मंच के निकट पहुँची और साध्वी समुदाय की ओर से साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशाजी ने शासन माता को उत्तरीय ओढ़ाया, इसी के अनंतर समणी समुदाय की ओर से बहुश्रुत परिषद् सदस्या साध्वी कनकश्रीजी ने एलवान (कम्बल) साध्वीप्रमुखाश्री जी को ओढ़ाया, तत्पश्चात् साध्वी समुदाय, समणी समुदाय तथा संत समुदाय की ओर से अभिनंदन पत्र प्रदान किया गया। इसी क्रम में आचार्यप्रवर ने विशेष सम्मान प्रदान करते हुए संतों को शासन माता हेतु मंच पर ही पट्ट लगाने का निर्देश दिया और पट्ट लगने के पश्चात् साध्वियों को शासन माता को व्यवस्थित बिठाने का निर्देश दिया, गुरु द्वारा प्रदत्त विशिष्ट सम्मान से अभिभूत साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि 'इतना मेरे साथ क्यों होता है?' इस पर आचार्यप्रवर ने कृपापूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए फरमाया कि 'और किसके साथ होना चाहिए, आप ही बताओ?

मेरे ५० वर्ष की यात्रा गुरुओं के बलबूते

शासन माता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि पूज्यप्रवर करुणा के सागर हैं, सबको खुले हाथ बाँटते हैं। मनचाहे भी बाँटते हैं पर किसी-किसी के लिए अनचाहे भी बाँट रहे हैं। लोग काम करते हैं, उन्हें गौरव का अनुभव होता है, पूज्यप्रवर! मैं ऐसा मानती हूँ कि मैं जो करती हूँ, मैं नहीं करती। आचार्य करते हैं। मैंने ५० वर्ष की यात्रा गुरुओं के बलबूते पर की है। गुरु के सहारे हर मुश्किल आसान हो जाती है।

एक वरदान माँगना चाहती हूँ

शासन माता ने अपने उद्बोधन में आगे कहा कि इस अवसर पर मैं भी आचार्यवर से एक वरदान माँगना चाहती हूँ। आप दिराएँगे वह वरदान? आपने जो इतना दिया है, वह मैंने स्वीकार किया है तो मैं माँगती हूँ उसे देना ही होगा। दक्षिण यात्रा करने के पश्चात् गुरुदेव तुलसी को धर्मसंघ ने युगप्रधान आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया था। चतुर्विध धर्मसंघ की भावना है कि परमपूज्य आचार्यप्रवर केवल दक्षिण भारत की ही नहीं पूर्वांचल की भी यात्रा करके पधारे हैं तो इस अवसर पर आचार्यवर का युगप्रधान के रूप में सम्मान होना चाहिए। आप सहमति दिराएँ कि ये कार्यक्रम भी आयोजित हो, आप वरदान दिराएँ।

धर्मसंघ की प्रार्थना स्वीकार करता हूँ

पूज्यप्रवर ने इस दौरान फरमाया कि 'हूँ जितने में ही रहूँ तो कैसा रहे?' प्रमुखाश्रीजी ने कहा कि मैंने भी आचार्यवर के निर्देश को स्वीकार किया है और यह तो मेरा ही नहीं पूरे धर्मसंघ का निर्देश है, अनुरोध है, प्रार्थना है, आप स्वीकार करवाएँ।

जब वातावरण ने अलग मोड़ ले लिया तब स्वयं आचार्यप्रवर ने संघ के भावपूर्ण अनुरोध को टाल नहीं सके और चिंहुओर उल्लास भरे माहौल को देखते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि 'जब शासन माता का फरमान है और संघ साथ में है तो मैं यह वरदान की बात स्वीकार करता हूँ।

पूरा पंडाल युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के जयकारों से गूँज उठा।

मुख्य मुनिप्रवर, मुख्य नियोजिकाजी एवं साध्वीवर्या जी ने भी शासन माता के प्रति अपनी अभिवंदना के स्वर अभिव्यक्त किए। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का भी वर्धापना किया, मंगलकामनाएँ की।

अमृतम् ग्रंथ का लोकार्पण

अमृत महोत्सव पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित अमृतम् ग्रंथ पदाधिकारियों द्वारा पूज्यप्रवर को लोकार्पण हेतु अर्पित किया गया। गुरुदेव ने तत्काल पट्ट से उतरकर खड़े-खड़े शासनमाता को अमृतम् ग्रंथ अर्पित किया।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल, सभा अध्यक्ष संपत डागा, सोनल पिपाड़ा, व्यवस्था समिति अध्यक्ष शांतिलाल बरमेचा, कमल बैद परिवार, अखिल भारतीय महिला मंडल अध्यक्ष नीलम सेठिया ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

जैविभा अध्यक्ष मनोज लुणिया, विभागाध्यक्ष पुखराज बड़ौला, अमृतम् ग्रंथा के कार्य से जुड़ी रचित चौपड़ा, कुलपति बच्छराज दुगड़ ने भी अपनी भावना की अभिव्यक्ति दी। अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा ने भी अभिनंदन पत्र साध्वीप्रमुखाश्रीजी को इस अवसर पर निवेदन किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि आचार्यप्रवर महान, महान, महान जादूगर हैं, जो नए-नए दृश्य दिखाते रहते हैं।

साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव अभ्यर्थना

अर्हम

● **संतवृंद** ●

ॐ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जय साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।
तुलसी गुरु की कृति है धृति है साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।
महाश्रमण गुरु कि असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

चंदेरी की कला निराली, दीक्षाली तब से दीवाली।
भैक्षवगण में किस्मत वाली, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

गण गणपति में पूर्ण समर्पण पावन दिल है, जीवन दर्पण।
रत्नत्रय से ही आकर्षण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

गुरु आज्ञा को शीष चढ़ाती, संस्कारों का दीप जलाती।
बढ़ती जाती शुभ योगों में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

समभावों में प्रायः रहती पर भावों को टाटा कहती।
परिषह रहती करुणा महती, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

गुरुओं को पहुँचाती साता, आस्था से झुक जाता माथा।
चार तीरथ की शासन माता, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव प्रमुदित गण तरु पल्लव पल्लव।
उत्सव गुरु सन्निधि में अभिनव साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

साध्वीप्रमुखा का अभिनंदन संतों का स्वीकारो वंदन।
गुरु हित गण हित जुग जुग जीयो, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

लय : जब प्यार किया तो डरना क्या---

अमृत-अर्चन

● **समणीवृंद** ●

तुलसी गीत गुणोत्कीर्तन, गुरु पादे अमृत-अर्चन।

हे जगजननी जगत् मोहिनी, विश्वव्यापिनी शतवंदन,
तुलसी कर कृति-कला कनकद्युति, महाश्रमणीवर नमोनमन।
अर्धशदी तव सुष्ठुशासना-प्रमुख आसना गुरु चरणन,
अमृत पादे, अमृत मोच्छब, अमृत दाता मनोनमन।
जय-जय---

ज्ञानी विज्ञानी अवधानी, विघ्न विनाशिनी पाप हरो,
पञ्चशताधिक श्रमणी भिक्खुणी, शांतिप्रदायिनी ताप हरो।
गुरुत्रय-ब्रह्मदृष्टि अनुसरणी, धर्मधारिणी हस्त धरो,
हे जगमाता, हे जगदम्बा, पाप-ताप-संताप हरो।
जय-जय---

तुलसी जीवन ग्रंथन लेखन, शोधन संपादन गुरुतर,
महाप्रज्ञ महामहिमाशाली चरण सेविका अति अनुत्तर।
सति शिरोमणी, संघ शिखंडिनी, गूंजे जश ध्वनि महीमात्तर,
जय-जय हे ममता स्रोतस्विनी, नेह झरे झरणा झर-झर।
जय-जय---

अमला-धवला शस्यश्यामला जगत् वत्सला निर्झरणी,
साध्वीप्रमुखा पट्टशोभिनी, निर्मल-विमला शिवसरणी।
दृढ़-संकल्पी निरविकल्पी, मानसशिल्पी यशस्विनी,
भैक्षवशासन मृदु अनुशासन, मातृहृदया मनस्विनी।
जय-जय---

चंदेवी की चमक चांदनी, चिंहु-दिशि चमके मुख आनन,
मन-वच-काय-भाव सुभाषिनी, करे चिकित्सा स्मितवचनम,
अद्यः उत्सव अमृत महोत्सव, सन्निधि गुरुवर महाश्रमण
श्रमण श्रेणी करे अमृत अर्चन मुखरित भाव फरे अर्पण।
जय-जय---

लय : अयि-गिरि---

अमृत महोत्सव गीत

● **साध्वीवृंद** ●

नभ से उतरी अरुणाई, सबके मन अतिशय भाई।
साध्वीप्रमुखा स्वर्णजयंती, गूंजे चिंहुदिशि शहनाई।।
ओम् जयतु जय, ओम् जयतु जय।

गुरुदेव तुलसी की, उस दिव्य दृष्टि को
वंदन करें आओ, इस भव्य सृष्टि को
तुम हो समता की, ममता की मूरत
सारे जहाँ में फैली है कीरत
पीड़ा हरती जन-जन की, करुणा वत्सलता मनभाई
नभ से उतरी---

स्वाध्याय की श्रुत की, निर्मल मंदाकिनी
गुरुत्रय की पाई, सेवा वरदायिनी
गुरु का हर इंगित पल-पल आराधा
गण-हित कुर्बा हो, सबका हित साधा
सम, शम, श्रम की पावन युति व्यक्तित्व तुम्हारा अतिशायी
नभ से उतरी---

पुरुषार्थ की गाथा, सदियाँ सुनाएगी
दुनिया प्रशिक्षण को तेरे पास आएगी
श्रद्धा समर्पण की अद्भुत नजीर हो
हर स्थिति में धीर तुम कितनी गंभीर हो
असाधारण साध्वीप्रमुखा महाश्रमण युग वरदाई
नभ से उतरी---

तुम शक्तिस्वरूपा हो अधरों पर सरस्वती
ऊर्जामयी आभा मन का तिमिर हरती
श्रम की कहानी, जीवन तुम्हारा
कितनों का जीवन तुमने संवारा
आभारी है श्रमणी परिकर, तुमने दी नव ऊँचाई
नभ से उतरी----

ये पाँच दशक पावन, अनुभव की निधि अनमोल
तन मन निरामय हो अर्पित आस्था के बोल
अमृत महोत्सव, लाया बहारें
तुमको बधाएँ, चंदा सितारे
वरण करो शुभ दीर्घायु को अनहद खुशियाँ हैं छाई
सौभागी हैं प्रभु! कलियुग में सतयुग की छवि दिखलाई
नभ से उतरी---

लय : खुशियों का दिन----

स्वर्ण-जयती चयन-दिवस की

● **साध्वी समत्वयशा** ●

स्वर्ण जयंती चयन दिवस की, गण में खुशी मनाएँ।
अष्टम साध्वी प्रमुखाश्रीजी, नव इतिहास रचाएँ।।

उत्सव के इस पावन-पल पर, आरती आज उतारें।
रचकर स्वस्तिक मंगल-मंगल, तेरे चरण पखारें।
संघ-समूचा हर्षित, पुलकित, गौरव-गाथा गाएँ।।

चंदेरी के चाँद की हर कला निखरी-निखरी।
कला से कनकप्रभा छनकर, गण-गुलशन मे तुम उभरी।
आधी दुनिया तेरे सहारे, नूतन शक्ति पाएँ।।

ऊँची-उड़ान भरें गण-नभ में, छोटी-छोटी सतियाँ।
तेरी नेहिल-नजरों को पा, खिल गई सारी कलियाँ।
वत्सलता के महासागर में, डुबकी रोज लगाएँ।।

अमृत महोत्सव, अमृत सन्निधि, अमृत-पान कराएँ।
एक झलक तेरी पाने को, दौड़े-दौड़े आए।
कुछ प्यासे-पंछी दूरी से, मन के भाव सुनाएँ।।
पा आशीर्वर महाश्रमणीवर! भाग्यलता विकसाएँ।।

लय : जनम-जनम का---

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

रामप्रस्थ, यूपी।

विमल कुमार सुशीला बांठिया, पीलीबंगा निवासी यूपी रामप्रस्थ प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा व संस्कारक हेमराज राखेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। संस्कारक हेमराज राखेचा ने तेयुप, दिल्ली की तरफ से बांठिया परिवार का आभार ज्ञापित किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से बांठिया परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

विवाह संस्कार

गांधीनगर (कच्छ)।

नवीनचंद भाई मेहता की सुपुत्री निशा कुमारी मेहता एवं बसंत कुमार मोरबिया के सुपुत्र मीत कुमार मोरबिया का शुभ विवाह संस्कार संपूर्ण जैन संस्कार विधि द्वारा शुद्ध मंत्रोच्चार के अंतर्गत किया गया।

संस्कारक के रूप में भुज से समाहित नरेंद्र भाई मेहता, प्रभुलाल भाई मेहता, गांधीधाम से संस्कारक विकास सुराणा एवं रोहित ढेलड़िया उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, मंत्री संदीप सिंघवी, उपाध्यक्ष रोहित ढेलड़िया, तेरापंथी सभा गांधीधाम के पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र भाई सिंघवी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

नालासोपारा (मुंबई)।

पिंटू स्व० राजेंद्र बाफना (कांकरोली), नालासोपारा-मुंबई के नूतन प्रतिष्ठान का उद्घाटन जैन विधि से करवाया गया। अभातेयुप जैन संस्कारक पारस बाफना ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्र स्थापित कर जैन विधि द्वारा संपादित किया।

तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी एवं अभातेयुप जेटीएन प्रतिनिधि विकास धाकड़ ने बाफना परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की। विधि संचालन तेयुप के पूर्व अध्यक्ष रमेश ढालावत ने किया। बाफना परिवार की ओर से संस्कारक एवं सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

विवाह संस्कार

रायपुर।

सिद्धार्थ (सुपुत्र - निर्मल चोरड़िया, महासमुंद) का शुभविवाह मोनिका (सुपुत्री - महावीर बोथरा, दुर्ग) के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया गया। संस्कारक अनिल दुगड़ ने नव-दंपति को संकल्पों से संकल्पित करवाते हुए मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विवाह विधि को संपादित कराया।

अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने जैन संस्कार विधि के बारे में जानकारी दी एवं दोनों परिवारों के प्रति आभार व्यक्त किया।

ज्ञातव्य है कि दोनों परिवार स्थानकवासी परंपरा के मानने वाले हैं। संस्कार विधि में तेयुप, रायपुर मंत्री गौरव दुगड़, जैन संस्कार विधि प्रभारी सुशील डागा के साथ वर-वधू के परिजन उपस्थित थे।

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी प्रदीप लालाणी के सुपुत्र एवं पुत्रवधू प्रवीण हर्षिता के नवजात पुत्र रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में अभातेयुप संस्कारक युवक रत्न राजेंद्र सेठिया, धर्मेन्द्र डाकलिया, पवन छाजेड़, प्रदीप लालाणी ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण संपन्न करवाया। इस अवसर पर संजय चोरड़िया व तेयुप गंगाशहर के ऋषभ लालाणी सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

✦ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं–मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

–आचार्यश्री महाश्रमण

✦ जो व्यक्ति जीव-अजीव के स्वरूप को जान लेता है, उसे अन्य अनेक बातों का ज्ञान हो सकता है।

–आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव अभ्यर्थना

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
7 - 13 फरवरी, 2022

✦ *व्यक्ति यह सोचे कि मेरा मित्र कल्याणमित्र है या नहीं? मात्र टाइम पास करने के लिए किसी को अपना मित्र बनाना बड़ी बात नहीं है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

शिशु संस्कार बोध परीक्षा

अड़ाजन।

ज्ञानशाला अड़ाजन में शिशु संस्कार बोध की परीक्षा आयोजित हुई। ज्ञानशाला प्रशिक्षक स्वीटी दक ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा परीक्षा की शुरुआत की। अड़ाजन के सभाध्यक्ष रामलाल कोठारी, ज्ञानशाला के क्षेत्रीय संयोजिका ज्योति मेड़तवाल, सह-संयोजिका अंजु संचेती, मुख्य प्रशिक्षक सुनीता मांडोत, ज्योत्सना बेन संघवी, संयोजक सुनील गुगलिया, सह-संयोजक महेश पारीख, क्षेत्रीय संयोजक विशाल पारीख, सह-संयोजिका वर्षा जैन की उपस्थिति में पेपर खोले गए।

परीक्षा में अवलोकन हेतु, अड़ाजन ज्ञानशाला के क्षेत्रीय ज्योति मेड़तवाल, सह-संयोजिका अंजु संचेती पधारे। ६० बच्चों ने परीक्षा दी। सभी प्रशिक्षिकाओं ने पूर्ण जागरूकता व प्रामाणिकता के साथ बच्चों की परीक्षा ली।

परीक्षा के पश्चात श्रावक प्रतिक्रमण कंठस्थ करने वाले ११ स्टार ज्ञानार्थियों का सम्मान वाव निवासी, सूरत प्रवासी प्रभाबेन सेवंतीलाल मेहता की ओर से किया गया व बच्चों को प्रोत्साहन देकर उत्साह बढ़ाया, वाप पथक सूरत महिला मंडल, प्रमुख कोकिलाबेन पारीख, विजय भाई पारीख आदि उपस्थित रहे। विशाल पारीख ने आभार व्यक्त किया। परीक्षा में सभी प्रशिक्षिकाओं व कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा।

शिशु संस्कार बोध परीक्षा का आयोजन

कोलकाता-पूर्वांचल।

ज्ञानार्थी बच्चों के संस्कार निर्माण हेतु केंद्र द्वारा निर्देशित शिशु संस्कार बोध परीक्षा का आयोजन पूर्वांचल सभा के परिसर तुलसी वाटिका में संपन्न हुआ। मुख्य प्रशिक्षिका गुलाब चोरड़िया, जया बोथरा सभी प्रशिक्षिकाओं के अथम श्रम से, अभिभावकों की जागरूकता से सभा के अंतर्गत चलने वाली ७ ज्ञानशाला के ६५ ज्ञानार्थी बच्चों ने अच्छी तैयारी के साथ उत्साह से भाग लिया।

पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, सभा मंत्री प्रवीण पगारिया, ज्ञानशाला संयोजक गौरव डागा की उपस्थिति में प्रश्न-पत्र का लिफाफा खोला गया। अध्यक्ष ने डॉ० प्रेमलता बाई का स्वागत करते हुए सभी प्रशिक्षिकाओं के निस्वार्थ भाव से बच्चों में सुसंस्कारों के बीज रोपित करने हेतु आभार प्रकट किया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष पवन सिंघी, संगठन मंत्री राजीव बोथरा, किशोर नौलखा उपस्थित रहे।

ज्ञानशाला के बच्चों की वार्षिक परीक्षा संपन्न

पीलीबंगा।

ज्ञानशाला के बच्चों की वार्षिक परीक्षा जैन भवन प्रांगण में हुई। परीक्षा केंद्र के व्यवस्थापक ओमप्रकाश पुगलिया ने बताया कि आज केंद्र के निर्देशानुसार पूरे भारत वर्ष में ज्ञानशाला की परीक्षा एक समय पर आयोजित हो रही है, पीलीबंगा केंद्र में भी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा परीक्षा बहुत ही उत्साह के साथ दी गई।

इस अवसर पर महासभा के आंचलिक प्रभारी देवेंद्र बांठिया, सभा के मंत्री प्रकाश डाकलिया, महिला मंडल की अध्यक्षा विनोद देवी छाजेड़ एवं मंत्री हेमलता डाकलिया, ज्ञानशाला की आंचलिक प्रभारी प्रतिभा दुगड़, तेयुप के मंत्री सतीश पुगलिया, ज्ञानशाला संयोजिका मधु बोथरा, मुख्य प्रशिक्षिका निशा छाजेड़ के साथ महिमा नौलखा, प्रेम पुगलिया, खुशबू नाहटा, डिंपल बैद आदि प्रशिक्षिकाएँ भी उपस्थित थी।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन

हैदराबाद।

महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में हैदराबाद नगरत्रय में संचालित समस्त २० ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों की वार्षिक परीक्षा का आयोजन तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अंतर्गत किया गय।

वार्षिक परीक्षा देशभर व नेपाल, दुबई, लंदन आदि विदेश में चलने वाली कुल ५२५ ज्ञानशालाओं में व्यवस्थित रूप से आयोजित हुई हैं। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में नगरत्रय में इस वर्ष ८ केंद्रों पर सभा के पदाधिकारीगण व कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

तेरापंथ भवन डीवी कॉलोनी में अध्यक्ष सुरेश सुराना, उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद, विभाग संयोजक सुनील बोहरा, कोषाध्यक्ष मुकेश चोरड़िया व तेरापंथ भवन हिमायत नगर में सहमंत्री धर्मेंद्र चोरड़िया आदि अनेक सदस्यगण उपस्थित थे। एकेडमी ईयर-२०२१ की वार्षिक परीक्षा में हैदराबाद में २८५ बच्चों ने ओरल परीक्षा दी, जिसमें लगभग ७५ प्रशिक्षिकाओं ने केंद्र निर्देशानुसार पाँचों भागों की परीक्षाएँ ली।

आंचलिक संयोजक अंजु बैद, क्षेत्रीय संयोजक सीमा दस्साणी, परीक्षा व्यवस्थापक पुष्पा बरड़िया, सहयोगी व्यवस्थापक सुमन सेठिया, मुख्य प्रशिक्षक रेखा संकलेचा, तीनों संयोजकों—संगीता गोलछा, सरिता नखत व डिम्पल बैद व मीडिया विभाग से सरोज लोढ़ा, प्रेम संचेती, मीनाक्षी सुराना ने निर्धारित केंद्रों पर व्यवस्था संभाली। परीक्षा की विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए हैदराबाद ज्ञानशालाओं के पूर्व ज्ञानार्थियों व निर्मल बैंगानी, राजकुमार गुजरानी का सहयोग प्राप्त हुआ।

ज्ञानशाला कार्यक्रम

उत्तर हावड़ा।

साध्वी स्वर्णरेखाजी की प्रेरणा से ट्रस्ट भवन में ज्ञानशाला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्रीजी द्वारा भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति के साथ हुई। संवाद के माध्यम से प्रशिक्षिकाओं ने बताया कि ज्ञानशाला आना क्यों जरूरी है और वहाँ पर क्या सिखाया जाता है। तत्पश्चात सभी प्रशिक्षिकाओं द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा रचित ज्ञानशाला की एक गीतिका का संगान किया।

बच्चों ने एक नाटक के माध्यम से दिखाया कि ज्ञानशाला जाने से उनमें क्या-क्या बदलाव हुए। उत्तर हावड़ा सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती ने ज्ञानशाला के बारे में बताया। ज्ञानशाला संयोजक प्रदीप बैद ने उत्तर हावड़ा की ज्ञानशालाओं के बारे में बताया एवं प्रशिक्षिकाओं को निस्वार्थ सेवा करने के लिए साधुवाद दिया।

बंगाल की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया एवं सह-संयोजिका पारख ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रेमलता चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए एवं नई ज्ञानशाला खोलने की प्रेरणा दी। अंत में आभार ज्ञापन ज्ञानशाला संयोजिका सरिता पटावरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजु कोठारी ने किया।

रिफ्रेशमेंट कोर्स का आयोजन

वृहद-कोलकाता।

वृहद-कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला में केंद्र से निर्देशित प्रशिक्षिकाओं के लिए रिफ्रेशमेंट कोर्स का आयोजन किया गया। इसमें महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल एवं राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने अपना अमूल्य समय प्रदान किया एवं अपना वक्तव्य दिया।

आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने कहा कि राष्ट्रीय पदाधिकारी, स्थानीय सभी सभा-संस्थाओं, कोलकाता ज्ञानशाला की टीम एवं सभी प्रशिक्षिकाओं का सहयोग हमें प्राप्त होने के कारण इस प्रकार के कार्यक्रम हो पाते हैं। उन सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

समिति के सदस्य मालचंद भंसाली ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम को प्रारंभ किया। कोलकाता सभा के मंत्री अजय भंसाली ने कहा कि कोलकाता में अच्छा काम हो रहा है। आंचलिक सह-संयोजक संजय पारख ने भी रिफ्रेशर कोर्स और उसके महत्त्व के बारे में अपने विचार रखे। कोलकाता के लगभग सभी सभा के अध्यक्ष-मंत्री इसमें जुड़े।

कार्यशाला में ध्यान पर प्रशिक्षण राजेंद्र मोदी ने, प्रतिभा कोठारी ने अणुव्रत, जैन विद्या के बारे में, रमेश पटावरी ने अपने आपको पहचानो, समय के साथ परिवर्तन होना जरूरी है, इस पर विस्तार से जानकारी दी तथा प्रेमलता चोरड़िया ने कालू तत्त्व शतक के कुछ बोल, भिक्षु विचार दर्शन से साध्य साधन, दान, दया आदि जैन परंपरा के इतिहास से आगम साहित्य की जानकारी दी।

कार्यक्रम का संयोजन उत्तर हावड़ा की क्षेत्रीय संयोजिका सुजाता दुगड़ ने किया। कम्प्यूटर एवं टेक्निकल संबंधी कार्यों में प्रशिक्षिका विनीता घोड़ावत और ममता नाहटा ने सहयोग दिया।

मानव में मानवता नहीं तो मानव भी दानव

मायावरम् (तमिलनाडु)।

भगवान महावीर ने सभी जीवों के लिए चार बातों की दुर्लभता बताई। चार दुर्लभ बातों में एक दुर्लभ बात है—मनुष्य जीवन। आज मनुष्य तो बहुत हैं, पर मनुष्यता नहीं है। इंसान तो है, पर इंसानियत नहीं है। एकमात्र मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो अपना आत्म चिंतन कर सकता है। निम्न विचार मुनि अर्हत कुमार जी ने कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि चार गति, चौरासी लाख जीव योनी में भटकते-भटकते बहुत मुश्किल से यह मनुष्य भव मिला। अगर हमने इसकी सार्थकता नहीं समझी, तो यह भव मिला, न मिला, हमारे लिए एक समान है। मनुष्य गति प्राप्त करने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं। हमें इसको व्यर्थ नहीं गँवाकर, इसका लाभ उठाकर, आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होना चाहिए।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि सत्संग जीवन की दिशा व दशा बदलने में अहम भूमिका निभाती है। मुनि जयदीप कुमार जी ने भगवान महावीर पर गीत का संगान किया। स्थानकवासी समाज की ओर से महावीर नाहर एवं राजेंद्र पोकरणा ने मुनिश्री के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए।

धर्म की आराधना करने वाले शांति से जीवन जीते हैं

उड़ीसा।

मुनि दीप कुमार जी ने बालमुनि काव्य कुमार जी के साथ छत्तीसगढ़ की सीमा पार कर उड़ीसा में मंगल प्रवेश किया। पश्चिम उड़ीसा के श्रावक बड़ी संख्या में मुनिश्री के स्वागत में तैयार थे। वहीं छत्तीसगढ़, रायपुर के श्रावक मुनिश्री को विदाई दे रहे थे।

खरियार रोड पहुँचने के पश्चात मुनिश्री का उड़ीसा स्तरीय स्वागत समारोह गुजराती भवन में हुआ। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि धर्म परम मंगल है। इसकी आराधना करने वाला शांति का जीवन जीता है। साधु-संत धर्म की स्थापना करते हैं और उसका प्रचार करते हैं। पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से उड़ीसा में प्रवेश किया है। अब छत्तीसगढ़ की विदाई हो गई। छत्तीसगढ़ में लगभग एक वर्ष ग्यारह दिन प्रवास हमारा रहा। सुरेंद्र चोरड़िया, रायपुर सभा अध्यक्ष ने निष्ठा से दायित्व निभाया।

वीरेंद्र डागा, तेयुप, रायपुर अध्यक्ष ने अच्छी सेवा की। मुनिश्री ने कई श्रावक-श्राविकाओं की सेवा का उल्लेख किया। मुनिश्री ने आगे कहा—उड़ीसा सभा के अध्यक्ष मुकेश जैन, रायपुर सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया, उड़ीसा महासभा प्रभारी छत्रपाल जैन, नवापारा विधायक राजेंद्र ढोलकिया, तेयुप रायपुर अध्यक्ष वीरेंद्र डागा, उड़ीसा के विभिन्न क्षेत्रों से समागत कई लोगों ने मुनिश्री के स्वागत में उद्‌गार व्यक्त किया।

खरियार रोड के श्रावकों ने भी भावभीना स्वागत किया। मंच संचालन संतोष डागा ने किया एवं आभार ज्ञापन उड़ीसा सभा मंत्री अनूप जैन ने किया। उपस्थिति अच्छी रही।

प्रेक्षावाहिनी का आयोजन

बालोतरा।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार न्यू तेरापंथ भवन, बालोतरा में प्रेक्षा वाहिनी का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम त्रिपदी वंदना उपासक प्रकाश वेदमूथा ने की। प्रेक्षा गीत का संगान प्रेक्षा वाहिनी संवाहक जवेरीलाल सालेचा द्वारा किया गया। मंगलभावना उपासक पुष्पराज कोठारी ने प्रयोग और संचालन प्रेक्षा वाहिनी सह-संवाहक ममता गोलेच्छा द्वारा किया गया। उपस्थिति लगभग ८०-९० भाई-बहनों की रही।

मंगलभावना समारोह

राजलदेसर।

तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रबोध के संगान के साथ सामुहिक सामायिक की आराधना की। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक समता की साधना है। सामायिक से आत्मा का विशुद्धिकरण होता है। सामायिक से कर्मों का क्षय होता है।

सामायिक के पश्चात मंगलभावना समारोह का द्वितीय चरण का कार्यक्रम शुरू हुआ। समारोह का शुभारंभ गीत के सामुहिक संगान के साथ हुआ। तत्पश्चात सभा के उपाध्यक्ष खेमचंद बरड़िया, कमल सिंह दुगड़, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया, मंत्री सविता बच्छावत, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका निर्मला जैन, मोनिका बैद, रीना बैद, ज्योति बरड़िया, मंजु देवी बाफना, खुशबू कुंडलिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर कन्या मंडल की दीपिका रांका, रिया कुंडलिया, प्रज्ञा कुंडलिया, श्रुति घोषल, आरती बैद, मीनाक्षी बुच्चा ने साध्वीवृंद का परिचय एवं उनकी पहचान तथा विशेषताओं को शब्द चित्रण के माध्यम से प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का नजारा पेश किया। जिया बैद, दिव्या घोषल ने अपनी प्रस्तुति से सबको भावविभोर कर दिया। पितरजी परिवार ने एक गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के नन्हे-नन्हे ज्ञानार्थी बच्चों ने नेता-अभिनेता के रूप में एक रोचक प्रस्तुति दी। सभी ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए साध्वीवृंद के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मीनाक्षी बुच्चा ने किया।

मंगलभावना समारोह

नोखा।

भौतिकता के युग में संयम व्रत धारण करना, अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना। भोग से विरक्त होकर योग में बढ़ना, संयम धारण करना विशेष आकर्षण का केंद्र होता है। तेरापंथ में दीक्षा लेकर गुरु के चरणों में समर्पित होना और विशेष है। नोखा की समणी शरदप्रज्ञा बैद परिवार से है। अपने जीवन में संयम, साधना का विकास करें। मंगलकामना। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने समणी शरदप्रज्ञा जी के मंगलभावना समारोह में रखे।

ग्रुप लीडर समणी मधुरप्रज्ञा जी ने समणी शरदप्रज्ञा जी को अध्ययनशील व विनय साधनाशील, कर्मठ समणी बताते हुए विशेष पुण्यात्मा बताया।

बैद परिवार, कन्या मंडल, हस्तीमल बैद, चाचा सुनील बैद, अनुराग बैद, भावेश बैद, कन्या निकिता बेद, तेजस बैद व बच्चों द्वारा समणी शरदप्रज्ञा के वैराग्य से लेकर अब तक की झाँकी प्रस्तुत की। भावनात्मक, सरस प्रस्तुति प्रभावशाली रही।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष हनुमानमल ललवानी, मंत्री इंदरचंद बैद, गोपाल लूणावत, मनोज घीया, ज्ञानमच्छ के मंत्री छगनलाल बरड़िया ने भी नोखा की रत्न के प्रति शुभकामनाएँ व कठिन मार्ग संयम स्वीकारना गौरव की बात कही, भावना व्यक्त की।

संयोजन उपासक अनुराग बैद ने किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

गांधीनगर।

तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी का पधारना हुआ। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादा बेजोड़ है, संगठन अनुपम है, विनम्रता का गुण मानो संघ के हर छोटे-बड़े सदस्यों में विरासत के रूप में प्राप्त है।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि हमारे निवेदन को स्वीकार कर शासनश्री ने महती कृपा कर आज यहाँ पर पधारे। बड़ों का जब-जब भी पदार्पण होता है छोटे निश्चिंत हो जाते हैं।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्रीजी ने गीत के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी सिद्धांतश्रीजी ने कहा कि आज धरती पर पैर नहीं टिक रहे हैं कि हम किस रूप में बड़ों का स्वागत-अभिनंदन करें। साध्वी सिद्धांतश्रीजी, साध्वी धैर्यप्रभाजी एवं साध्वी दर्शितप्रभाजी ने गीत का संगान किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश दक, ट्रस्ट अध्यक्ष गौतम मूथा, महिला मंडल सहमंत्री ज्योति संचेती ने अपने भाव व्यक्त किए। कन्या मंडल ने कार्यक्रम का मंगलाचरण किय। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी दर्शितप्रभा जी ने किया।

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में २१८ रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण

जसोल।

बाड़मेर जिला मुख्यालय के गिड़ा पंचायत समिति के सणतरा ग्राम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा संचालित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन स्व० रेशमीदेवी-स्व० भैरचंद गोगड़ की पुण्य स्मृति में श्रेष्ठीवर्या नारायणदास, भरतकुमार, पीयूषकुमार, प्रांजुल, आयुष, तन्मय, आगम एवं समस्त गोगड़ परिवार, पाली-बालोतरा के सहयोग से किया गया।

शिविर का शुभारंभ मंगलाचरण से किया गया। टीपीएफ के प्रबंधक कमलेश भाटी ने बताया कि शिविर के दौरान ९५ जनरल चिकित्सकीय जाँच, ११० नेत्र रोग, १३ दंत रोग कुल २१८ मरीजों की जाँच की गई तथा नि:शुल्क दवाइयों व चश्मों का वितरण किया गया।

शिविर के दौरान डॉ० श्याम कुमावत, रमाशंकर पांडे, डॉ० शवन रॉय, डॉ० आशीष, श्रवण गुर्जर, सीताराम गुर्जर ने अपनी सेवाएँ दी। कार्यक्रम में स्थानीय नागरिकों का सहयोग रहा।

अभिनव अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन

एरोली।

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी के सान्निध्य में अभिनव अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में आयोजित हुआ। साध्वी पंकजश्रीजी द्वारा नवकार महामंत्र से प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम उपस्थित सभी लोगों के अलग-अलग १३ ग्रुप बनाए गए और साध्वी पंकजश्रीजी ने सभी भाग लेने वाले महानुभावों को प्रतियोगिता के नियम बताए एवं अंत्याक्षरी कार्यक्रम शुरू किया।

प्रतियोगिता को तीन चरणों में पूरा किया गया। जिसमें विजेता के रूप में प्रथम जयंत कोठारी एवं देवेंद्र बोहरा व द्वितीय इंदिरा चंडालिया को घोषित किया गया। अभिनव अंत्याक्षरी कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं एरोली के सभी श्रावक एवं श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

टीपीएफ के विविध आयोजन

चल चिकित्सालय में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

जसोल (टापरा)।

बाड़मेर जिला मुख्यालय के बालोतरा पंचायत समिति, टापरा ग्राम में टीपीएफ द्वारा संचालित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन मातूश्री स्व० सुआदेवी धर्मपत्नी स्व० सोहनराज गोठी की पुण्य स्मृति में भंवरलाल अभिषेक कुमार मनीष कुमार गोठी परिवार टापरा-जयपुर के सहयोग से किया गया।

शिविर का शुभारंभ नवकार मंत्र के साथ किया गया। टीपीएफ के प्रबंधक कमलेश भाटी ने बताया कि शिविर के दौरान ६० जनरल फिजिशियन, ११० नेत्र रोग, १३ दंत रोग कुल २१३ मरीजों की जाँच की गई तथा नि:शुल्क दवाइयों व चश्मों का वितरण किया गया।

शिविर के दौरान डॉ० श्याम कुमावत, रमाशंकर पांडे, डॉ० शवन रॉय, डॉ० आशीष, विद्याधर गुर्जर, सीताराम गुर्जर ने अपनी सेवाएँ दी। इस शिविर को सफल बनाने में ओमप्रकाश गोठी, मुदित, सतीश वडेरा आदि स्थानीय सदस्यों का सहयोग रहा।

३०० नागरिकों को लगा टीका

बीकानेर।

टीपीएफ, बीकानेर द्वारा मुनि शांतिकुमार जी, मुनि श्रेयांस कुमार जी, तपस्वी मुनि भूपेंद्र कुमार जी व मुनि पद्मकुमार जी के मंगलाचरण से अग्रिम पंक्ति कार्यकर्ताओं व वरिष्ठ नागरिकों के लिए कोविड बूस्टर डोज़ ड्राइव का तेरापंथ भवन, गंगाशहर में आयोजन किया गया।

शिविर को सफलतम बनाने में टीपीएफ परिवार को विभिन्न संस्थाओं का अभूतपूर्व सहयोग मिला, जिसकी वजह से शिविर में लगभग ३०० नागरिकों ने टीका लगवाया।

शिविर में जैन महासभा अध्यक्ष लूणकरण छाजेड़, तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, पूर्व महापौर व जीतो चेयरमैन नारायण चोपड़ा, जिला महामंत्री मोहन सुराणा, जिला महिला मोर्चा अध्यक्ष व पार्षद सुमन छाजेड़, महामंत्री सरिता नाहटा, पार्षद प्रतिनिधि मानमल सोनी, मंडल अध्यक्ष जेठमल नाहटा, तेयुप पूर्व अध्यक्ष जतन संचेती, तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा व समस्त टीम, अणुव्रत विश्व भारती प्रचार-प्रसार मंत्री धमेन्द्र डाकलिया सहित अनेक जन उपस्थित रहे तथा टीपीएफ सदस्यों ने अपना दायित्व निर्वहन किया व संपूर्ण मेडिकल टीम को विशेष धन्यवाद दिया।

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

पादरू।

बाड़मेर जिला मुख्यालय के सिवाना पंचायत समिति के पादरू ग्राम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा संचालित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सा द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन स्व० सुमेरमल, बाबूलाल, गोपीलाल ओसवाल की पुण्यतिथि में अणसीदेवी गोपीलाल ओसवाल, पादरू के सहयोग से किया गया।

शिविर का शुभारंभ मंगलाचरण से किया गया। टीपीएफ के प्रबंधक कमलेश भाटी ने बताया कि शिविर के दौरान ७६ जनरल फिजिशियन, १०५ नेत्र रोग, १० दंत रोग कुल १९१ मरीजों की जाँच की गई तथा नि:शुल्क दवाइयों व चश्मों का वितरण किया गया।

शिविर के दौरान डॉ० श्याम कुमावत (जनरल फिजिशियन), रमाशंकर पांडे (नेत्र रोग), डॉ० शवन रॉय (दंत रोग), डॉ० आशीष, श्रवण गुर्जर, सीताराम गुर्जर ने अपनी सेवाएँ दी। इस शिविर को सफल बनाने में जेठमल, चिंटु देवासी आदि स्थानीय नागरिकों का सहयोग रहा।

कविता

शासनमाते ! तुम्हें बधाऊँ

● **साध्वी अणिमाश्री** ●

शासन माते! तुम्हें बधाऊँ।
गीत तेरे आज गाऊँ।।

बीज का विस्तार हो तुम।
स्कंध का आधार हो तुम।
नाव की पतवार हो तुम।
मैं मगन हो गुनगुनाऊँ।
शासन माते! तुम्हें बधाऊँ।।

संकल्पों ने तुम्हें संवारा।
मंजिलों ने तुम्हें पुकारा।
परिस्थिति ने तुम्हें निखारा।
मुक्त-कंठ से मैं सुनाऊँ।
गीत तेरे आज गाऊँ।।

बन अप्रमत्त बढ़ती रही हो।
सदा शिखर चढ़ती रही हो।
इतिहास नव गढ़ती रही हो।
मुदित मन से मैं बताऊँ।
शासन माते! तुम्हें बधाऊँ।।

सागर-सी गहराई तुममें।
मेरु-सी ऊँचाई तुममें।
सूरज-सी अरुणाई तुममें।
लो भावों का अर्घ्य चढ़ाऊँ।
गीत तेरे आज गाऊँ।।

तन-मन से मैं सदा समर्पित।
पादाम्बुज में सब कुछ अर्पित।
मेरा रोम-रोम है हर्षित।
बोलो, क्या सौगात सजाऊँ।
शासन माते! तुम्हें बधाऊँ।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
7 - 13 फरवरी, 2022

✦ *जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

मास्क वितरण

राजलदेसर।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एवं कस्बे के बाजार में स्थित रेहड़ी एवं दुकानों पर बस, स्टैंड, ऑटो रिक्शा स्टैंड आदि सार्वजनिक स्थलों पर मास्क वितरण का कार्यक्रम तेयुप के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया।

तेयुप अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल, मंत्री रजत बैद, कोषाध्यक्ष छत्रसिंह बच्छावत के नेतृत्व में तीसरी लहर के मद्देनजर लोगों में कोरोना के प्रति जागरूकता पैदा करने एवं मास्क व वैक्सीन लगाकर इस भीषण महामारी से बचाव हेतु कोरोना जागरूकता संदेश की बात कही और अस्पताल प्रभारी डॉ० संजय बुंदेला को ५०० मास्क सुपुर्द किए।

इस अवसर पर अस्पताल प्रभारी डॉ० संजय बुंदेला ने तेयुप द्वारा किए गए इस कार्य के लिए परिषद को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर सभा के उपाध्यक्ष खेमचंद बरड़िया, परिषद के सदस्य आदि उपस्थित रहे।

फिट युवा-हिट युवा

गंगाशहर।

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा सूर्य नमस्कार सप्ताह मनाया जा रहा है। तेयुप गंगाशहर के प्रकल्प 'फिट युवा-हिट युवा में योग को जीवन का अंग बनाने के लिए अभातेयुप द्वारा आह्वान किया गया, इसी के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा एक सार्थक प्रयास किया गया, जिसमें तेरापंथ भवन में लगभग एक घंटे तक व्यायाम, प्रणायाम एवं सूर्यनमस्कार सामुहिक रूप से किया गया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, गंगाशहर के मंत्री रतन छलाणी ने किया। अमोलक राम, कुंदन, मनोज का विशेष श्रम नियोजित हुआ। तेयुप के मंत्री देवेंद्र डागा, किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़, विनोद जैन, रौनक चोरड़िया, संदीप रांका, रौनक बोथरा, चैतन्य रांका, शोभित सेठिया, चेतन बोथरा, धनपत भंसाली, ऋषभ लालाणी, रोहित बैद एवं अनेक किशोर व युवा साथियों की उपस्थिति रही।

सेवा की ओर बढ़ते कदम

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत गीता आश्रम बापूजी नगर में अनाथ बच्चों के लिए सुबह नाश्ते की व्यवस्था की गई।

परिषद अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वगात किया एवं सेवा कार्य टीम के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। तेयुप द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में परिषद के अध्यक्ष अमित दक, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, उपाध्यक्ष मनोज बरड़िया, मंत्री विकास बांठिया, सेवा कार्य संयोजक सुशील पारख सह-संयोजक विशाल दक एवं हिरण परिवार पारिवारिकजन उपस्थित थे। सहयोगी परिवार का आभार मंत्री विकास बांठिया ने व्यक्त किया। गीता आश्रम के संचालक ने परिषद के इस कार्य की प्रशंसा की।

मेगा ब्लड टेस्ट कैंप

अमराईवाड़ी।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, अमराईवाड़ी पर किया गया। पूरी टीम इस कैंप को सफल बनाने में अपना योगदान दे रही है। एटीडीसी संयोजक मुकेश सिंघवी ने नवकार मंत्र से कैंप की शुरुआत की। तेयुप अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया ने सभी का स्वागत किया। अभातेयुप सदस्य सतीश चोरड़िया ने कैंप के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की।

कैंप में बेजीक बॉडी प्रोफाइल एवं फुल बॉडी प्रोफाइल के दो पैकेज रखे गए। कैंप के शुभेच्छक के रूप में प्रवीण कुमार, अशोक कुमार, पगारिया परिवार का पूरा सहयोग रहा। लगभग ३० सदस्यों ने इस कैंप का लाभ लिया। पधारे हुए सभी लोगों ने एटीडीसी के इस कैंप के कार्य की सराहना की।

इस कैंप में अमराईवाड़ी सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, मंत्री गणपत हिरण, दिनेश चंडालिया, दिनेश सिंघवी, अशोक सिंघवी, प्रकाश बाफना सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे। महिला मंडल की भी विशेष उपस्थिति रही। कैंप में सोशियल मीडिया टीम के जयेश सिंघवी, विशाल सिंघवी का विशेष श्रम रहा।

सेवा कार्य

साउथ कोलकाता।

तेयुप ने स्थानीय स्वयंसेवी संस्था 'स्वर्णिम फाउंडेशन' के आह्वान पर बेलूर के पास एक बस्ती के बच्चों के लिए जरूरत का सामान उपलब्ध कराने में अपना योगदान दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र से करवाया गया। बच्चों ने तेयुप के सदस्यों का स्वागत किया। सभी युवा साथियों ने बच्चों को अपने हाथों से खाना खिलाया। तत्पश्चात बच्चों को स्टेशनरी, किताबें, खिलौने इत्यादि का वितरण किया। स्वर्णिम फाउंडेशन को आभार ज्ञापन परिषद के मंत्री रोहित दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति परिषद के वरिष्ठ अतिथि आशीष दुगड़ एवं टीपीएफ साउथ कोलकाता के मंत्री प्रवीण सिरोहिया का था।

इस कार्यक्रम के संयोजक संदीप मनोत एवं नरेंद्र सिरोहिया थे और परिषद के संगठन मंत्री अकिंत दुगड़ ने अहम भूमिका निभाई।

हमारी संघनिष्ठा और सम्यक् निर्मलता...

(पृष्ठ १२ का शेष)

हमारी संघनिष्ठा और सम्यक् निर्मलता भी वर्धमान रहे। यह काम्य है। मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि हमारा संघ संवर्धन कर रहा है। संघ की नींव के जो पत्थर हैं, वो बड़े मजबूत हैं। वे पत्थर है–विनय, समर्पण, सेवा भाव व सहिष्णुता का। इन पर संघ का प्रासाद खड़ा हुआ है। नायक के बारे में अनेक बातें बताई जाती हैं। नायक के पास विजेता हो। हमें विजनरी आचार्य प्राप्त हुए हैं। आचार्य भिक्षु इस प्रासाद का प्रकार के रूप में मर्यादाओं का निर्माण किया।

साध्वीवृंद द्वारा वर्धमानता का गीत की प्रस्तुति हुई। तेरापंथ युवक परिषद ने गीत की प्रस्तुति दी। मुनि सुपार्श्वकुमार जी जो लाडनूं से हैं, लंबे समय के पश्चात पूज्यप्रवर के दर्शन किए है, अपनी भावना अभिव्यक्त की।

जैविभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक तीर्थंकर चरित्र के अंग्रेजी अनुवाद को पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में लोकार्पित की। तेरापंथ परिचायिका सन् २०१० से २०२१ जिसका संकलन मुनि ऋषभकुमार जी आदि संतों ने किया है। श्रीचरणों में लोकार्पित की गई।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि दो पुस्तकें अभी सामने आई हैं। यह तेरापंथ परिचायिका जो पुस्तक है, यह बहुत ही उपयोगी प्रतीत हुई। बहुत जानकारियाँ इस पुस्तक से मिल सकती हैं। ऐतिहासिक बातें हैं। तीर्थंकर चरित्र तो श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी की हैं, उसका अंग्रेजी अनुवाद आया है। अंग्रेजी पाठकों के लिए जानकारी का माध्यम बन सकती है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि साधना तो संघबद्ध ही हो सकती है।

प्रभु महाश्रमण तुम मेरे अंतर के राम हो

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

बच्चा सा----

एक दिन आचार्यवर ने फरमाया–
दवाई आदि बराबर चलती है?

साध्वियाँ–तहत्

आचार्यवर–आहार अपने आप करती है क्या?
आहार की रुचि रहती है?

जिनप्रभाजी–आहार करवाना पड़ता है। प्रबुद्धयशाजी करवाती हैं। ये अपने हाथ से नहीं खाती हैं। कभी-कभी निगलने में भी कठिनाई होने लगी है।

आचार्यवर–हाँ! ए तो एकदम बच्चा सा हूग्या है।

ए तो कुछ मांगै कोनी। जियां मां बच्चा को ध्यान राखै। बच्चा ने दूध पिलाणो हुवै और वो नहीं पीवै तो बीं रै एक चपत लगा देवै। बो रोतो रैवे तो मुँह खुल ज्यावै, चम्मच स्यूं दूध पिलाता रेंवै। दूध उतरतो जावै। आं रे ओ तो संभव कोनी। पर ए भी बच्चा सा हूग्या है। किसी दवाई कणां देणी है। कांई आहार पाणी देनो है आदि-आदि छोटी-मोटी सब बातां को साध्वियाँ ने पूरो ध्यान राखणो चाहिये और आं री अच्छी परवरिश हूणी चाहिजै।

साध्वियाँ–तहत् गुरुदेव।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी–गुरुदेव! सहयां खूब मनोयोग स्यूं दिन-रात सेवा कर रह्या है। सेवा में पूरी तरह स्यूं जागरूक है।

पढाई-लिखाई सब गौण

परमपूज्य आचार्यप्रवर हमें उनकी सेवा और उनकी चित्त समाधि के लिए बार-बार प्रेरणा दिलवाते थे। एक दिन फरमाया–तुम साध्वियों को भी निराश नहीं होना चाहिए। मन में भावना रखो इन्हें खड़ा करना है। सेवा करना है। बहुत, बहुत, बहुत ही अच्छा काम है। महान निर्जरा का काम है। निर्जरा के साथ अच्छा पुण्यार्जन भी हो सकता है। तुम्हें पुण्य के लिए नहीं निर्जरा और इसकी चित्त समाधि के लिए सेवा करनी है। तुम लोगों के लिए सेवा कार्य ही मुख्य है। अभी पढ़ाई-लिखाई सब गौण है। इसके मन में शांति रहे, प्रसन्नता रहे।

साध्वियाँ–तहत् गुरुदेव! आपश्री ने बहुत कृपा करवाई।

हम ही आएँगे

२६ अक्टूबर को परम श्रद्धेय आचार्यवर भिक्षु विहार भीलवाड़ा से विहार कर पुनः 'महाश्रमण सभागार' में पधारे। पधारते ही प्रवचन करवाया। फिर प्रातराश किया। उसके बाद पुछवाया–हम चंद्रिकाश्री जी को दर्शन देने कब आएँ?

साध्वी सुमतिप्रभाजी जानकारी कर निवेदन करके आई। पूज्यप्रवर ने लगभग १२:२५ पर पधारने का फरमाया। जैसे ही चंद्रिकाश्रीजी को पता चला कि आचार्यश्री पधार रहे हैं। तो उन्होंने कहा–गुरुदेव आज विहार करके पधारे हैं। अभी गुरुदेव के बहुत श्रम हुआ है। मैं स्वयं ही व्हीलचेयर से वहाँ जाकर दर्शन करके आ जाऊँगी। मुझे अभी व्हीलचेयर में ले चलो। आचार्यप्रवर को मेहनत मत करवाओ।

जिनप्रभाजी–मैं गुरुदेव को तुम्हारी भावना निवेदन कर आती हूँ। फिर व्हीलचेयर से ले चलेंगे। साध्वीश्री ने जाकर गुरुदेव से निवेदन किया। गुरुदेव ने फरमाया–नहीं, नहीं हम ही आएँगे।

हम नतमस्तक थे गुरुदेव के कृपाभाव के प्रति।

आधा घंटा का कोर्स

एक दिन आचार्यश्री ने फरमाया–जप स्वाध्याय क्या चलता है?

हमने कहा–नियमित एक घंटा नवकार मंत्र का जप, एक घंटा ॐ भिक्षु का जप, तेरापंथ प्रबोध, संती कुंथु की माला, दसवेआलियं का एक अध्ययन और भी अन्य माला जाप। 'णमो सिद्धाणं' का जप भी बराबर चल रहा है।

साध्वी जिनप्रभाजी–मुख्यनियोजिकाजी भी रोज पधारते हैं। मंत्र का जप करवाते हैं। बहुत प्रेरणा दिलवाते हैं।

आचार्यवर–(प्रसन्नता के साथ), अच्छा। जाप आदि स्वास्थ्य की दृष्टि से चल रहे हैं। ये सब शरीर की दृष्टि से हैं। आत्मा की दृष्टि से भी कुछ चलना चाहिए।

चंद्रिकाश्रीजी–तहत् गुरुदेव! कृपा करवाओ। आत्मा की दृष्टि से बहुत जरूरी है।

आचार्यवर–प्रतिदिन एक साध्वी दसवेआलियं का चौथा अध्ययन सुनाएँ। और आराधना की एक-एक ढाल सुनाएँ। हमारी ओर से आत्मा के लिए यह आधा घंटे का कोर्स है।

आदरणीया साध्वीवर्याजी प्रायः प्रतिदिन उन्हें आराधना की एक ढाल सुनाते। वे बड़ी तन्मयता से सुनती। आचार्यवर भी बार-बार पुछवाते क्रम बराबर चल रहा है ना।

(क्रमशः)

युवालोक भवन में अभातेयुप के केन्द्रीय कार्यालय हुआ लोकार्पण

लाडनूं, २७ जनवरी, २०२२

जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज के ४५ हजार से अधिक युवाओं एवं ३५१ शाखा परिषदों के विशाल संगठन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के जैन विश्व भारती स्थित युवालोक भवन में नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय का लोकार्पण आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन पदार्पण एवं मंगलपाठ के साथ हुआ। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा एवं पूरे प्रबंध मंडल व विशिष्टजनों की गरिमामयी उपस्थिति में अनुदानदाता परिवार के सदस्य जगतसिंह-मधु, नवीन-सुषमा, वरुण, मनुज बैंगानी, लाडनूं-कोलकाता द्वारा कार्यालय का लोकार्पण किया गया।

इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा- 'परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के समय अनेक संस्थाओं ने जन्म लिया। उनमें से एक है 'अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्'। यह संस्था जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज की एक अच्छी संस्था है। इस संस्था के मूल सदस्य तो युवा ही होते हैं। अवस्था भी अपने आप में महत्त्वपूर्ण होती है। युवकत्व में शक्ति भी होती है। इसलिए युवा शक्ति शब्द प्रयुक्त होता है। वृद्ध है तो वे अपना अनुभव देते हैं लेकिन जहाँ भागदोड़ करनी हो वहाँ युवा काम आते हैं। कठिन काम हो तो युवा लोग सामने आते हैं तो वह कार्य शक्तिमत्ता के साथ संपादित होने की संभावना रहती है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद अनेक गतिविधियों को संचालित कर रही है और कार्यकर्ताओं में उत्साह देखने को मिलता है। विनम्रता का भाव, कार्य करने की आबलनिष्ठा भी देखने को मिलती है। आध्यात्मिक गतिविधियाँ—जैसे सामायिक आदि भी आजकल युवा लोग करते हैं, यह अच्छी बात है। किशोर मंडल भी साथ में जुड़ा हुआ है। किशोरों में अच्छे संस्कार, युवको में अच्छी निष्ठा है, यह अच्छी बात है। यह युवालोक तो पुराना है लेकिन कार्यालय का रूप नया है। युवालोक यानि युवा जगत। दूसरा युवा आलोक यानि युवाओं में प्रकाश। तो दोनों को बोल सकते हैं। युवालोक यानि युवाओं में प्रकाश रहे और युवकों में अच्छी भावना, अच्छे संस्कार रहें और अच्छा कार्य होता रहे।'

मुख्य मुनि महावीरकुमारजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा—'युवाओं में जोश है, जोश के साथ होश बना रहे। समाज का प्रत्येक युवक अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के साथ जुड़े और आचार्य प्रवर के पावन पथदर्शन के साथ स्वयं के और संघ के आध्यात्मिक विकास में सहयोग करे।'

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने कहा- 'गुरुइंगित के अनुरूप प्रत्येक युवक संघ व संगठन के प्रति श्रद्धा व भक्ति के साथ आगे बढ़ने हेतु तैयार है। कार्यकर्ता संगठन के प्रति अपना उत्तर दायित्व स्वयं समझते हैं। आचार्य प्रवर के मार्ग दर्शन में युवा शक्ति अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ती रहे।'

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने आचार्य प्रवर के प्रति संपूर्ण युवाशक्ति की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय में पूज्यप्रवर का श्रद्धासिक्त अभिनंदन किया। प्रबुद्ध विचारक श्री नवीन बैंगानी ने कार्यालय के निर्माण में सहयोग को अपने परिवार का सौभाग्य बताया।

इस अवसर पर संस्था शिरोमणी जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष सुरेशचंद गोयल, जैन विश्व भारती के पूर्व कुलपति राकेश कठोतिया, महामंत्री प्रमोद बैद, अ०भा० तेरांपथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया, अ०भा० तेरापंथ युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, उपाध्यक्ष रमेश डागा, जयेश मेहता, महामंत्री पवन मांडोत, सहमंत्री अनंत बागरेचा, भूपेश कोठारी, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, पंचमंडल सदस्य मूलचंद नाहर, कार्यालय प्रबंधक राजेन्द्र खटेड़ सहित राष्ट्रीय कार्यसमिति के अनेक सदस्य एवं समाज के अनेक विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे। पूज्य गुरुदेव ने नवनिर्मित कार्यालय के प्रत्येक कक्ष का अवलोकन कर कृपावृष्टि की।

पूज्य गुरुदेव के पावन पदार्पण एवं मंगल पाठ के पश्चात नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता एवं पूरे प्रबंध मंडल की गरिमामयी उपस्थिति में अभातेयुप उपाध्यक्ष एवं जैन संस्कारक जयेश मेहता द्वारा संपन्न करवाया गया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का साहित्य...

(पृष्ठ १२ का शेष)

यह अमृत महोत्सव का अवसर आया है, इस उपलक्ष्य में साहित्य नए व्यवस्थित रूप में आया है। जिन्होंने इनके संपादन में श्रम किया है, योगदान दिया है, उन्होंने भी अपनी सेवा की है, श्रम दान किया है। अमृत महोत्सव से पहले दिन आपके साहित्य का नव स्वरूप अमृत महोत्सव की निष्पत्तिमत्ता को उजागर करने वाला है। कार्यक्रम के साथ ज्ञान का काम भी किया है। मौके-मौके पर काम हो जाता है।

इतना विराट साहित्य सामने आया है, वो एक निष्पत्तिपूर्ण हो गया है। साहित्य का व्यवस्थित रूप देखने में आ रहा है। जैविभा को यह मौका मिलता रहता है। साहित्य प्रकाशन के लिए प्रायः एक मात्र संस्था हमारे धर्मसंघ की है। अमृत महोत्सव का रचनात्मक कार्य इसको कहा जा सकता है। इसमें श्रम करने वालों ने ज्ञान-यज्ञ में अपनी आहूतियाँ दी हैं। साध्वीप्रमुखाश्री जी का वाङ्मय ज्ञान जगत, साहित्य जगत के लिए अपने आपमें एक अवदान है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने तो संपादन करके एक तरह से नवनीत तैयार कर दिया है, पर हमारे से तो नवनीत खाना भी मुश्किल हो रहा है। भगवती जोड़, मेरा जीवन-मेरा दर्शन कितना बड़ा संपादन किया है। लगभग ८४ पुस्तकों का संपादन आपने किया है। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने अपने जीवन में साहित्य के क्षेत्र में जो सेवा दी हैं, मेरी कामना है कि आगे भी लंबे काल तक साहित्य की गंगा प्रवाहित होती रहे। आप साहित्य की गंगा में निमज्जन भी करती रहें।

आपके स्वास्थ्य की भी इतनी सक्षमता रहे कि वो साहित्य की सरिता को प्रवाहित करने में आप निमित्तभूत-योगभूत बनी रहे। हमारे धर्मसंघ में जो साहित्य का कार्य होता है, वो अपने आपमें गौरवास्पद कुछ अंशों में कहा जा सकता है। हमारे आचार्यों का कितना साहित्य है, इसके अलावा भी चारित्रात्माओं व गृहस्थों का कितना साहित्य है। आगम के साहित्य का तो कहना ही क्या? मैं उसे हमारे धर्मसंघ का सिरमौर साहित्य कहना चाहूँगा।

मेरा चिंतन था कि साध्वीप्रमुखाश्री जी का साहित्य व्यवस्थित रूप में सामने आए जो हो गया है। तेरापंथ के इतिहास के रूप में गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन चरित्र पुस्तक रूप में भी जल्दी सामने आए। उनका भी लोकार्पण हो ऐसी हमारी मंगलकामना है। अपनी आत्म संतुष्टि भी साहित्य के लिए व्यक्त करता हूँ कि मेरा एक चिंतन था कि साध्वीप्रमुखाश्री जी का साहित्य एक अच्छे रूप में सामने आए। मैंने जो स्वप्न-इंगित प्रस्तुत किया था, शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी को हमारी समायोजिका बनाया था। मेरे स्वप्न-इंगित को साकार करने में अंगुलियों का जो श्रम लगाया है, साधुवाद दिया जा रहा है।

साध्वीप्रमुखाजी द्वारा संपादित साहित्य की सूची दी गई है, वो तो लगभग ६३ संख्या आई है, जो खंडों को जोड़ने से आई होगी।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि आचार्य श्रीराम ने अपने साहित्य में लिखा है—वह स्थान मंदिर है, जहाँ पुस्तकों के रूप में मूक पर ज्ञान चेतना रूप में देवता निवास करते हैं। अब्दुल कलाम ने गीता-रामायण आदि वैदिक पुस्तकें भी पढ़ीं। उनका उनके जीवन पर असर यह हुआ कि बहुत सी बात बदल गई। उन्होंने जीवन भर मांसाहार नहीं किया। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि गीता एक विज्ञान है।

गुरुदेव के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव आते तो मैं कविताएँ लिखती। धीरे-धीरे प्रयास बढ़ता गया। आज पूज्यप्रवर ने जो आशीर्वाद फरमाया है—आपका आशीर्वाद फलदायी कार्यकारी बने। मैंने दीक्षा के तीन वर्षों बाद गुरुदेव के निर्देशानुसार प्रवचन लिखती, गुरुदेव उसके लिए आदेश निर्देश फरमाते। गुरुदेव ने यात्रा के संस्मरण लिखने का भी निर्देश फरमाया। दक्षिण यात्रा का लगभग १००० पृष्ठ का ग्रंथ लिखने का अवसर मिला।

गुरुदेव के आशीर्वाद से ही जयाचार्य के साहित्य संपादन का अवसर मिला। गुरुदेव का मार्गदर्शन मिलता रहता। मेरी साहित्य की यात्रा का काम गुरुदेव के मार्गदर्शन से ही हुआ। सब गुरुओं का ही प्रताप है। हमारे वर्तमान के लेखन में आचार्यश्री महाश्रमण जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी ने साहित्य यात्रा में जो मार्गदर्शन दिया वो मील का पत्थर हैं

मुख्य नियोजिका जी ने भी अपनी आंतरिक भावनाएँ साध्वीप्रमुखाश्री जी के लिए अभिव्यक्त की। साध्वी वर्याजी ने भी अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम ईच्छाओं का सीमाकरण करें, उनका अंत नहीं है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
7 - 13 फरवरी, 2022

✦ *तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुँचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का साहित्य वाङ्मय जगत के लिए वरदान है : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २६ जनवरी, २०२२

साध्वीप्रमुखा चयन अमृत महोत्सव पर साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी साध्वीश्री कनकप्रभाजी के साहित्य का लोकार्पण। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जिन्हें असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी से उपमित किया है। वे साध्वीप्रमुखाओं में प्रथम साध्वीप्रमुखा है कि जिन्होंने इतने साहित्य का सृजन किया है। आपके साहित्य पाँच विभागों में वर्गीकृत हैं—यात्रा, गद्य, पद्य, संस्मरण और पद साहित्य।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के साहित्य को पूज्यप्रवर के श्रीचणों में लोकार्पण हेतु प्रस्तुत किया।

अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत साहित्य लोकार्पण के अवसर पर मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान का एक माध्यम है—श्रवण और दूसरा माध्यम है—पठन। और भी कुछ उपाय हो सकते हैं। आदमी सुनकर, कल्याण को भी जान लेता है और पाप को भी जान लेता है।

कल्याण और पाप यानी अच्छा और बुरा कल्याणकारी और अहितकारी दोनों को सुनकर जाना जा सकता है। परंतु जानने के बाद करना क्या है, वह महत्त्वपूर्ण बात होती है। जो श्रेय है, कल्याणकारी है, उसका आचरण करना

चाहिए। जो पापात्मक प्रवृत्ति है, उसको छोड़ देना चाहिए।

सुनने से ज्ञान हो सकता है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने कितने-कितने प्रवचन किए थे। परमपूज्य महाप्रज्ञ जी ने कितने प्रवचन, भाषण दिए थे। ज्ञान का दूसरा माध्यम है—पठन। पढ़ने के द्वारा भी बहुत ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। साहित्यकार-लेखक होते हैं, वो एक लिखित रूप में ग्रंथ प्रस्तुत करते हैं, वो पाठक की आँखों का विषय बन सकता है।

आज साध्वीप्रमुखाजी के ग्रंथों के लोकार्पण का कार्यक्रम हो रहा है। पढ़ना ज्ञान का एक साधन है। पढ़ने वाले तो कितना समय पढ़ने में लगा देते हैं। पढ़ने के साथ मननशीलता और ग्रहणशीलता हो तो पढ़ने का अधिक लाभ हो सकता है। लिखने के लिए भी पढ़ने का अभ्यास सामान्यतया अपेक्षित होता है। स्वयं उस बात को आत्मसात करके फिर उसको लिखें।

शब्द अपने आपमें मूर्त है, पुद्गल है, पर शब्द में प्राणवत्ता है, मूल तत्त्व है, वह उसका अर्थ है, शब्द और अर्थ दोनों का महत्त्व है। शब्द की जो अर्थात्मा है, वो मूल है, वो हमें ज्ञान देने वाली हो सकती है। लेखक को शब्द शिल्पी तो होना ही चाहिए। शब्दों के माध्यम से क्या परोस रहा है, उसका भी महत्त्व है। शब्द रूपी रथ पर अर्थ रूपी महाराजा बैठकर यात्रा करता है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी विराजमान हैं। गुरुदेव तुलसी के समय से आपको देखता आ रहा हूँ। कुछ अंशों में लेखन का आपको नशा सा हो गया है। जिस चीज का नशा हो जाता है, उस चीज को संचित करने में भी आनंद आ सकता है। आपका स्वतंत्र लेखन भी है, दूसरा पक्ष है—संपादन। आज तो आपके स्वतंत्र लेखन के साहित्य का लोकार्पण हुआ है।

संपादन का काम भी आपका बहुल मात्रा में हो सकता है। गुरुदेव तुलसी के कितने साहित्य को आपके संपादन से प्रस्तुत होने का मौका मिला होगा। लिखने के लिए आदमी कुछ ऐसा साहित्य पढ़े जिसमें कुछ जीवंतता हो और लिखने का भी पथदर्शन भी प्राप्त होता रह सके। साध्वीप्रमुखाश्री जी में पढ़ने का भी शौक और रुचि रही है।

कविता बनाना तो आपके लिए कुछ अंशों में खेल है। विषय दे दो, दो घंटे में कविता बनकर सामने आ सकती है। यह अपनी प्रतिभा का, कवित्व शक्ति का क्षयोपशम मानना चाहिए। हर किसी के वश की बात नहीं है।

विद्वता के दो अंग हैं—कवित्व और वक्तृत्व। उसमें दोनों बातें हैं। मेरा आकलन और अनुमान है कि साध्वीप्रमुखाश्री जी का जो साहित्य है, पढ़ने वाले पढ़ें और समीक्षा करें। साध्वीप्रमुखाश्री जी का साहित्य कुछ स्तरीय साहित्य है। यह मेरा सामान्य आकलन रूपेण एक निष्कर्ष है। कविता साहित्य और गद्य साहित्य भी पठनीय है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

हमारी संघनिष्ठा और सम्यक् निर्मलता वर्धमान रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २७ जनवरी, २०२२

वर्धमान महोत्सव का दूसरा दिन। भैक्षव शासन के एकादशम अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्तमान महोत्सव का मध्यवर्ती द्वितीय दिवस। वर्धमानता अच्छी भी हो सकती है और गलत भी हो सकती है। यह निर्भर करती है दिशा पर। वर्धमानता किस दिशा में हो रही है।

जैसे हमारे संत लोग विहार करते हैं, कभी जानकारी के अभाव में दूसरा मार्ग ले लेते हैं। विहार कर रहे थे वर्धमानता तो हो रही थी पर गलत मार्ग पर हो गई। ठीक मार्ग पर हो तो वह हितकर हो सकती है। विकास की दिशा सही है या गलत यह एक महत्त्वपूर्ण विषय बनता है। ज्ञान के क्षेत्र में विकास करें, अच्छा है।

ज्ञान मात्र अपने आपमें अच्छा है। शुद्ध चीज होती है, फिर भी इसमें विवेक होना चाहिए कि मेरे लिए क्या पढ़ना अधिक लाभप्रद हो सकता है। कौन से समय क्या कार्य करना चाहिए, यह विवेक हो। जैविभा में समण संस्कृति संकाय जो ज्ञान विस्तार का कार्य कर रहा है, गृहस्थों के लिए अच्छा है। जैन विद्या का अच्छा ज्ञान कराया जाता है। हमें मूल विषय का ज्ञान पहले करना चाहिए। बाद में तुलनात्मक ज्ञान करें।

ज्ञान के साथ दर्शन हमारा पुष्ट रहे। सम्यग् दर्शन के लिए हमारी श्रद्धा रहे कि जिनेश्वर देव ने जो प्रज्ञप्त किया है, वो सही ही है। यथार्थ के प्रति जितनी श्रद्धा मजबूत होती है, वह सम्यग् दर्शन का एक आयाम है। संघीय मान्यताओं पर श्रद्धा हो। केवली जाने वह ही सत्य है। व्यक्तिगत चिंतन हो सकता है, पर जब तक संघ की मान्यता न हो उस बात को प्रकट न करें।

हमारा शोध के साथ बोध भी सही हो। तर्क किया जा सकता है। तर्क करने से मंथन होता है, तो सत्य सामने आ सकता है। अच्छे विचार आने पर संघ की मान्यता परिवर्तित हो सकती है। डालमुनि और वीरचंद भाई के कच्छ-भुज के प्रकरण को समझाया। वीरचंद भाई कितने निराग्रही थे। यथार्थ को जैसे-तैसे खंडित करने का प्रयास भी पाप है। यथार्थ में तेरा-मेरा गौण है, प्रभु ने कहा वो ही ठीक है। वहाँ चुप रह जाना चाहिए।

आचार्य भिक्षु के राजनगर के प्रसंग को समझाते हुए फरमाया कि आचार्य भिक्षु के चिंतन में भी यथार्थ के प्रति मोड़ आया, वे आगे बढ़ें और क्रांति भी की। यथार्थ के प्रति जितनी श्रद्धा हमारी मजबूत होगी, सम्यक्त्व पुष्ट हो सकेगा। सम्यक्त्व पुष्टि के लिए कषाय-मंदता भी रहे।

सम्यक्त्व पुष्टी के लिए तत्त्वबोध को भी बढ़ाने का प्रयास है। दर्शन एक ऐसा तत्त्व है, जो हमारे चारित्र को भी निर्मल बना सकता है। ज्ञान और चारित्र के बीच दर्शन होने से यह निष्कर्ष निकल

सकता है कि दर्शन एक सेतू है। इससे ज्ञान चारित्र में परिवर्तित हो सकता है। ज्ञान और आचार तट है, सेतू संस्कार हैं। श्रद्धा निष्ठा मजबूत होती है, तो ज्ञान आचार में आ सकता है।

संघ के प्रति भी हमारी निष्ठा हो। संघ को छोड़ने की बात करने वाला अपने व्यक्तित्व में थोड़ी कमी लाता है। संघ छोड़ने की बात करना कमजोरी की बात है। ज्ञान होना अलग बात है। पर संघनिष्ठा प्रमुख हो। साधु-साध्वी या समणियाँ हो या श्रावक-श्राविकाएँ भी हों, संघनिष्ठा के संदर्भ में हमारी निष्ठा मजबूत रहें। यही जीएँगे, मरेंगे तो भी यही मरेंगे। अंतिम श्वास संघ में ही लेंगे। संघ निष्ठा में कमी न हो, मजबूती रहे।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**